हज़रत मौलाना
तारिक़ जमील साहब के

इबरत अंगेज़
बयानात

तर्तीब
मौलाना अरसलान बिन अख़्तर

FARID
BOOK DEPOT

हज़रत मौलाना
तारिक़ जमील साहब के

इसरत अंगेज़ बयानात

तर्तीब

मौलाना अरसलान बिन अख़्तर

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नाम किताब

हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब के

इबरत अंगेज़ बयानात

लेखकः मौलाना अरसलान बिन अख़्तर

पहला एडीशनः 2008 साइज़ः 23x36x16

पेजः 960

प्रस्तुत-कर्ताः जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशकः

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

Maulana Tariq Jameel Sahab ke Ibrat Angez Bayanat

By: **Maulana Arslan Bin Akhtar**

Pages: 960 Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Delhi-13
Ph.: 65851762, 9990438635

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

मुअल्लिफ़ की अर्ज़

कुछ दर्द भरी बातें

अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह मेरे करीम आक़ा का मुझ स्याहकार पर एहसान है कि उसने हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब दामत बरकातुहुम के बयानात पर सन् 2000 ई० में किताब तर्तीब देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। उस वक़्त किसी ने भी मौलाना के बयानात को किताबी शक्ल में ढालने का दिलचस्प अन्दाज़ व तर्तीब व उनवानात के साथ काम नहीं किया था। उस वक़्त मौलाना के बयानात को लोगों ने हाथो हाथ लिया और मेरे गुमान से ज़्यादा उसे लोगों ने पसन्द किया।

यह बात हैरत वाली भी है और शुक्र के लाएक़ भी है। शुक्र इस बात पर है उस आक़ा ने इस आजिज़ को कुछ सफ़हात स्याह करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। हत्ताकि ख़तों और फ़ोन पर दर्जनों लोगों ने एहक़र के काम को सराहा और मज़ीद बयानात पर काम करने पर अमादा किया। इन मुहब्बत भरे ख़तों पर एहक़र को दोबारा इस पर मज़ीद काम करने की हिम्मत हुई। जबसे मैंने होश संभाला किताब हमेशा आँखों के सामने रही। मुताला मेरा सबसे महबूब मशग़ला बना मगर मौलाना के बयानात से मैं मौलाना का आशिक़ होकर रह गया।

हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब्ब दामत बरकातुहुम का सिर्फ़ नाम की हद तक जमील (ख़ूबसूरत) नहीं हैं बल्कि आमाल और किरदार भी आपका बेमिसाल है। आप जब बयान करते हैं तो फ़िक्रे उम्मत, ग़मे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपकी ज़बान चेहरे से ज़ाहिर होता है। इसीलिए एक एक बोल दिल में उतरता चला जाता है और आप इस शे'र का चलता फिरता नमूना नज़र आते हैं—

ख़ंजर लगे किसी को तड़पते हैं हम अमीर
सारे जहां का दर्द हमारे जिगर में है

आपका एक एक जुमला व फ़साहत बलाग़त से सजा होता है। आपका बयान ऐसा दिलनशीन होता है कि सुनने वाले अपने आँसुओं में डूब जाते हैं। उनकी आँखें झलक उठती हैं। दिल बेक़रार हो जाते हैं। सिसकियाँ फिज़ाओं में बुलन्द होना शुरू हो जाती हैं।

यही वह दौलत है जिसकी वजह से लाखों लोग मौलाना के बयानों को सुनकर तौबा कर रहे हैं। आप लाखों लोगों को रुलाते हैं और खुद भी रोते हैं। ऐसा लगता है जैसे जहन्नम आपके सामने है। मौलान के बयान का एक एक बोल नायाब मोती से ज़्यादा अहम है। उनकी हक़ीक़त सिर्फ़ क़द्रदान लोग ही जानते हैं।

किसी दिल वाले ने क्या ख़ूब कहा है। मेरे नज़दीक यह लफ़्फ़ाज़ी मौलाना पर सादिक़ आती है—

पैकरे जमाल भी हैं, फ़िक्र की इब्तिदा भी हैं, फ़हम की इन्तेहा भी हैं, आफ़ताब की चमक भी, कलियों की महक भी, सब्ज़े की लहक भी, बुलबुल की चहक भी, हीरे की डलक भी।

हक़ीक़त में मौलाना को मेरे मौला ने बड़ा ही निराला बनाया है। आपकी अदा भी बेमिसाल है, आपकी मुस्कुराहट भी अजीब है, आपका बोलना कभी तो आँसुओं से रुलाता है, कभी चहरों पर ख़ुशियाँ बिखेरता है। आपकी मजलिस में बैठकर इंसान दुनिया और सारी चीज़ों से बेख़बर होकर एक अजीब नूरानी फ़िज़ा में पहुँच जाता है। आपकी मजलिस में लोगों की ख़ौफ़े आख़िरत से चीखें निकल जाती हैं और साथ ही साथ अल्लाह से लौ लगाने का जज़्बा पैदा हो जाता है और हर आदमी की कैफ़ियत इस शे'र का मिसदाक़ बन जाती है—

याद में तेरी सबको भुला दूँ कोई न मुझे याद रहे
सब ख़ुशियों को आग लगा दूँ ख़ाना-ए-दिल आबाद रहे

सुनूँ मैं नाम तेरा धड़कनों में
मज़ा आ जाए सोया दिल बदल दे

सहल फ़रमा मुसलसल याद अपनी
ख़ुदाया रहम फ़रमा दिल बदल दे

तेरा हो जाए बस इतनी आरज़ू है
बस इतनी तमन्ना है दिल बदल दे

अल्लाह तआला ने आपको क़ुरआन पर बेमिसाल उबूर दिया है। आप एक ही मौज़ू पर क़ुरआन में ग़ोता मारकर एक ही उनवान पर मोती चुन चुनकर ढेर लगा देते हैं कि सुनने वाले हैरान होकर रह जाते हैं। एक ही जैसे अल्फ़ाज़ का जोड़ मौलान ही की शान है।

ऐसा मालूम होता है कि अल्फ़ाज़ व क़ाफ़िया आपके सामने हाथ जोड़कर खड़े हैं कि हम आप ही के लिए हैं और यही

अल्फ़ाज़ का ज़ख़ीरा आपकी तक़रीर के हुस्न में निखार पैदा करता है। किसी ने ख़ूब कहा है–

मौलाना की तक़रीर होगी, अल्लाह का क़ुरआन होगा, कमली वाले का फ़रमान होगा, जो मान लेगा वह पक्का मुसलमान होगा।

मौलाना हक़ीक़त में इस दौर के हकीमुल-उम्मत हैं। आपके बयान मुर्दा दिलों में नई रूह फूंक देते हैं। आपकी तक़रीर में दरिया की सी रवानी होती है, मौजों का शोर होता है।

यही वजह है कि मौलाना से ख़्वाब में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया–

ऐ मौलवी तारिक़! तेरा दीन सलामत रहे।

तीन बार फ़रमाया।

हज़रत मौलान अबुल हसन अली नदवी रह० ने आपके बयान सुनकर फ़रमाया–

मुझे तमन्ना थी कि मैं मौलाना का बयान सुनूं। फिर जब मैंने बयान सुना तो मुझे तारिक़ के हाफ़ज़े व फ़साहत व बलाग़त व तर्तीबे अल्फ़ाज़ को देखकर पुराने बुज़ुर्गों की शख़्सियात याद आ गई और फिर अल्लाह का शुक्र अदा किया कि इस दौर में भी ऐसे लोग मौजूद हैं जिनको देखकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का दौर यादा आ जाता है।

आप ख़ुत्बात के बादशाह हैं। फ़साहत व बलाग़त तो आपके घर की चीज़ है। मौलान के बयानात में ज़्यादातर वाक़िआत होते हैं। गोया आप सबक़ और इबरत देने वाले वाक़िआत को ख़ूबसूरत लड़ी में पिरोकर सुनने वालों को सुनाते हैं कि सुनने वाला बयान के अन्दाज़ से आख़िरत की वादियों में गुम हो जाता है। आपकी मजलिसों में बैठने वालों का दिल यह चाहता है कि

यह मजलिस कभी ख़त्म ही न हो।

मेरे भाईयो! आज मौलाना के बयानों की हम क़द्र करें। यह न हो कि कल कोई कहने वाला कहने पर मजबूर हो जाए—

बाद तेरे हुस्न व इश्क़ समझाएगा कौन?
वह बज़्म अब कहाँ वह मुहब्बत भरी बातें कहाँ
तुम क्या गए रूठ गए दिन बहार के

मुझे उम्मीद है कि यह किताब आपका मुख़्लिस दोस्त साबित होगी। जिन हज़रात को इस किताब से नफ़ा हो वह हज़रात मौलाना जमील साहब और बन्दे आजिज़ को, अहक़र के पीर व मुर्शिद व उस्तादों और जिन हज़रात ने किताब की तैयारी में मदद की उनको और ख़ासतौर पर मरहूम भाई हाफ़िज़ अकबर (उम्र 26) को अपनी दुआओं में याद रखें।

आख़िर में मैं अपने मौला का जितना शुक्र अदा करूं वह कम है। मैं तो गुनाहों से सना हूँ लेकिन हक़ीक़त में बड़ी चाहत से बिखरे हुए मोतियों का जमा किया है। मेरी दुआ है और आप भी दुआ करें—

ऐ बेकसों के मौला! तू इन मोतियों को क़ुबूलियत की दौलत बख़्श दे और इस स्याहकार को दर्दे दिल अता फ़रमा दे।

﴿اللهم كن لي محبا﴾ ऐ अल्लाह! तू मेरा बन जा और मुझे अपना बना ले।

बन्दा स्याहकार

अरसलान बिन अख़्तर

यकुम रमज़ान सन् 1425 हिज्री

मौलाना अरसलान बिन अख़्तर हज़रत मौलाना डा० मुफ़्ती निज़ामुद्दीन शहीद की नज़र में

डा० साहब के क़लम से मुख़्तलिफ़ किताबों पर लिखी गई तक़रीरों की कुछ चुनींदा इक़्तिबासात

मौलवी अरसलान बिन अख़्तर की किताब "नमाज़ में ख़ुशू व ख़ुज़ू" बुज़ुर्गों की बातों का अच्छा ज़ख़ीरा है। ख़ुसूसन दूसरे हिस्से में ख़ुशू व ख़ुज़ू की सिफ़त पैदा करने का तरीक़े ख़ूब बयान किए गए हैं। अल्लाह से दुआ है कि अल्लाह तआला इनको उम्मत के लिए फ़ायदेमंद बनाए। (आमीन)

बन्दे ने अज़ीज़ मौलवी अरसलान की किताब "हुसूले विलायत" देखी माशाअल्लाह इस मक़सद के लिए बहुत फ़ायदेमंद है। इस किताब के मज़मून भी माशाअल्लाह बहुत ऊँचे हैं। इन्शाअल्लाह इसके पढ़ने से हर शख़्स में मुहब्बते इलाही का जज़्बा पैदा होगा।

अल्लाह तआला मुअल्लिफ़ को अपनी मख़्लूक़ के लिए बाइस-ए-हिदायत बनाए। (आमीन)

हज़रत डा० साहब रह० ने मौलाना अरसलान की किताब "अल्लाह के आशिक़ों की आशिक़ी" की तक़रीज़ में लिखा है कि मौलवी अरसलान साहब का बैअत का तअल्लुक़ क्योंकि आरिफ़ बिल्लाह हज़रत मौलाना मुहम्मद हकीम अख़्तर साहब से है इसलिए उनके मुरीदों को भी इन चीज़ों में से अच्छा ख़ासा हिस्सा मिला है। इसलिए मुहब्बते इलाही का मौज़ू मुअल्लिफ़ के लिए अजूबा नहीं है बल्कि देखाभाला है। मेरी दुआ है अल्लाह तआला

मौलवी अरसलान को अपनी कामिल मुहब्बत व पहचान नसीब फ़रमाए। (आमीन)

हज़रत डा० साहब ने "गुनाहों का समुंद्र" नामी किताब में तक़रीज़ के दौरान लिखा है–

बन्दा मौलवी अरसलान की मेहनत को क़द्र की निगाह से देखता है और दुआ करता है कि अल्लाह तआला इस किताब को अपने दरबार में क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

हज़रत मौलाना डा० मुफ़्ती निज़ामुद्दीन शामज़ई रह०

O O O

मौलाना अरसलान बिन अख़्तर अकाबिर की नज़र में

हकीम मुहम्मद अख़्तर साहब दामत बरकातुहुम

किताब "अल्लाह तआला बन्दों से कितनी मुहब्बत करते हैं" तीन सौ किताबों से मुस्तनद है। जिसमें सूफ़ी मौलवी अरसलान साहब सल्लमहूल्लाह तआला ने अपने फ़ितरी ज़ौक़, आशिक़ाना, आरिफ़ाना से मुहब्बत और माअरफ़त के निहायत मुफ़ीद मज़मून जमा किए हैं। मुझे क़वी उम्मीद है कि यह किताब और मौसूफ़ की दूसरी किताबों का पढ़ना उम्मते मुस्लिमा के लिए माअरफ़त

और मुहब्बते खुदावन्दी के हुसूल में निहायत मुफ़ीद साबित होगा। दिल से दुआ करता हूँ कि हक़ तआला मौसूफ़ की तसनीफ़ और तालीफ़ की हुई किताबों को उम्मते मुस्लिमा के लिए निहायत मुफ़ीद बनाकर पढ़ने वालों और मददगारों के लिए सदक़ा जारिया बनाए। (आमीन)

O O O

हज़रत मौलाना यूसुफ़ लुधियानवी शहीद रह०

हज़रत लुधियानवी रह० ने मौलाना अरसलान की क़िताब "अलामाते मुहब्बत" की तक़रीज़ में लिखा है कि ज़ेरे नज़र मजमुआ में हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अख़्तर साहब के मुरीद जनाब मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर ने निहायत मेहनत और कोशिश से आसानी से भरी और मुस्तनद हवालों से सजी ज़ेरे नज़र किताब मुरत्तब फ़रमाई है जो कि तारीफ़ और भरोसे के लायक़ है। अल्लाह तआला इस मजमुए को फ़ायदेमंद फ़रमाए।

(आमीन)

अल्आरिज़ हज़रत मौलाना यूसुफ़ लुधियानवी शहीद रह०

O O O

विषय सूची

मज़मून	पेज न०
अल्लाह का तआरुफ़	
अव्वल भी तू आख़िर भी तू	49
ज़मीन आसमान का शहंशाह	50
निराला बादशाह	51
हर ऐब से पाक कौन है?	53
हर मुहताजी से पाक कौन है?	54
अल्लाह के इल्म की बुलन्दी	55
ख़्यालात से ऊँची ज़ात	56
इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दहकती आग से हिफ़ाज़त	58
अल्लाह की बड़ाई अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी	59
इन्सान अल्लाह की क़ुदरत का नमूना	59
अल्लाह तआला का सिलसिल-ए-नसब	61
बादशाहों का बादशाह कौन है?	62
कोई है मेरे अलावा?	63
कोई है ज़ो अल्लाह की कारीगरी में ऐब निकाल सके?	64

- अल्लाह के इल्म की वुसअत 65
- अल्लाह पाक की क़ुदरते कामिला 66
- वह तो काली चियोंटी को भी देखता है 66
- दुनिया भर के क़लम अल्लाह की तारीफ़ लिखने से आजिज़ 69
- अंधेरी कोठरी में बल्ब ले जाओ 71
- ख़ूबसूरत चेहरा! कीड़ों की ग़िज़ा 72
- सबसे ज़्यादा डराने वाली क़ुरआनी आयत 73
- हबीब रह० का ख़ूबसूरत लड़की की तरफ़ न देखना 75
- हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु की अमानतदारी 76
- हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ौफ़े ख़ुदा 77
- तेरे रोने ने फ़रिश्तों को भी रुला दिया 79
- देखो मेरा बन्दा ऐसा होता है 79
- क़यामत के बारे में क़ुरआन का लहजा 80
- जहन्नम की पुकार 81
- चंगेज़ ख़ान और हलाकू ख़ान का ज़िक्र 81
- क़यामत की हौलनाकियाँ 82
- अल्लाह की नाफ़रमानी का अंजाम 83
- क्या आप ने जहन्नम से हिफ़ाज़त की तैयारी कर ली? 84
- जहन्नम का खौलता पानी 85
- चखो दोज़ख़ का अज़ाब! बड़े मज़े किए थे दुनिया में 86
- दोज़ख़ की आग का बिस्तर 88
- जहन्नम का खौलता पहाड़ 88
- जहन्नम के साँप और बिच्छू 89
- दोज़ख़ का कढ़वा पानी 89

- आँसूओं की बरकत 90
- अल्लाह से तौबा कर लें 90

O O O

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शाने मुबारका

- कामयाबी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों में है 93
- मुहब्बत का अनोखा अन्दाज़ 94
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ क़ुरआन की ज़बान से 96
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बुज़ुर्गी पर अल्लाह का क़सम खाना 97
- आग की पूजा की शुरूआत 99
- आपकी पैदाईश पर अल्लाह की ख़ुशी 100
- बुतपरस्ती का ज़वाल (वाक़िआ) 103
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश पर यहूदी का शोर-व-गुल 104
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुस्न की कहानी अम्मा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़बानी 105
- राहिब (सन्यासी) की बशारत 105
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसललम का मौजिज़ा! सूखा पेड़ का खुजूर देने लग गया 106
- आपकी नबुव्वत की गवाही जानवर की ज़बानी 107
- सरकश ऊँटों की फ़रमांबरदारी का वाक़िआ 110
- झाड़ियों ने दीवार बना दी 111

- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत की गवाही पेड़ की ज़बान से 111
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्न व जमाल शायर की नज़र में 112
- सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने का वाक़िआ 113
- मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेमिसाल दिलनशीन जिस्म मुबारक का तज़्किरा 115
- क़द मुबारक 115
- जबीन (माथा) मुबारक 116
- नाक मुबारक 116
- अब्रू मुबारक 116
- आँख मुबारक 116
- होंट मुबारक 117
- गाल मुबारक 117
- दाँत मुबारक 117
- दाढ़ी मुबारक 117
- गर्दन मुबारक 117
- आपकी दिलनशीन आवाज़ का जादू 118
- सुन्नत नबवी की अहमियत मिसाल के ज़रिए 119
- सुन्नत पर अमल करने से फ़तह 121
- सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत 122
- मौलाना इलयास रह० और फ़िक्रे उम्मत 124
- उम्मत की मुहब्बत में काएनात के सरदार को पत्थर मारे जा रहे हैं 124
- कोई माँ इतना नहीं तड़पी जितना आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम तड़पे 126

- उम्मत के लिए पाँच घंटे फ़िक्र करने वाला कौन? 127
- जब उम्मत के लिए नालैन मुबारक ख़ून से रंगीन हो गयीं 128
- मौत के वक़्त भी उम्मत की फ़िक्र 130

O O O

अल्लाह से दोस्ती

- मुहब्बत के आदाब 133
- शुक्र की कसरत के ईनाम 134
- मैं (मौलाना तारिक़ जमील) आलिमे दीन कैसे बना? 135
- सबसे पहले अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला नबी 136
- अल्लाह की ताक़त व क़ुदरत 137
- पानी के करिश्मे 138
- कोई है मेरे जैसी क़ुदरत वाला? 139
- बन्दों के दिलों में मेरी मुहब्बत बिठा दो 140
- याद में तेरी सब को भुला दूँ 141
- मैं अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूँ 141
- माबूद तू ही है, महबूब तू ही है, मतलूब तू ही है 144
- हम वह करें जो अल्लाह चाहता है 145
- गुनाहों के पहाड़ बख़्शिश का सैलाब 146
- रहमत भरी इबादत 147
- टूटा हुआ दिल अल्लाह का घर 148
- "ला इलाह इलल्लाह" का मुतालबा 149
- तू ही है जिसे याद किया जाए 150
- तूने मुझे पा लिया तो सब कुछ तुझे मिल गया 150

- जितने एहसान हैं उतनी ही नाफ़रमानियाँ 151
- कोई है मुझसे ज्यादा मुहब्बत करने वाला 152
- इधर भी तू उधर भी तू, हर जगह तू ही तू 153
- है कोई मुझे से बड़ा मेहरबान
- अल्लाह पर मर मिटिए 155
- ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत का जाल 156
- दिल को अल्लाह की मुहब्बत से भर दो 157
- कुत्ते से सबक़ लो 157
- वफ़ा सीखनी हो तो घोड़े से सीखो 158
- मेरा जीना मेरा मरना अल्लाह के लिए हो 160
- बेचैन दिल का मरहम! अल्लाह 160
- कितनी नाफ़रमानियाँ मगर करीम 161
- शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० का अनोखा वाक़िआ 161
- ख़ून के आँसू 162
- होश में आ जाओ ऐसा न हो कि! 162
- फ़क़ीर वह है जिसे अल्लाह न मिला 163
- क़ारून से अल्लाह की मुहब्बत 164
- मेरे गुनाहगार बन्दे तू पुकार मैं हाज़िर हूँ 166
- कोई है ऐसा मेहरबान ज़रा दिखाओ तो सही 166
- फ़िक्रे आख़िरत हो तो ऐसी हो 167
- बाँदी की अल्लाह से मुहब्बत का वाक़िआ 168
- ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा की पुकार! तू नहीं सुनता तो अल्लाह को सुनाती हूँ 169
- ज़ालिम तुझे पता है यह कौन है? 171
- दिल की उजड़ी हुई दुनिया की भलाई 172

○ ○ ○

कुरआन नमाज़ की बरकत

- अहमकों की दुनिया 177
- दिल व दिमाग़ से गंदगी निकाल फेंको 178
- ऐ मेरी उम्मत नमाज़ न छोड़ना 179
- नमाज़ की पाबन्दी करो और कराओ 180
- नमाज़ों को सीखो 181
- अल्लाह की मुहब्बत में रोने की लज़्ज़त 182
- नमाज़ के हैरतअंगेज़ फ़ज़ाईल 183
- नमाज़ियों के पाँच दर्जों की तफ़सील 184
- (सिर्फ़) जुमा की नमाज़ पढ़ने वालों के लिए तंबीह 185
- पत्थर दिल इन्सान 185
- हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की कैफ़ियते नमाज़ 186
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का नमाज़ का एहतिमाम 186
- तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई! अब तो आजा 187
- भुलाता हूँ फिर भी वे याद आते हैं 188
- मुर्दा गधे को ज़िन्दगी मिल गई 189
- समुंद्र में घोड़ों की दौड़ 189
- ऐ समुंद्र मेरे लोटे को वापस कर दे वरना! 191
- मसनून अज़कार के लिए वक़्त निकालें 192
- बेनमाज़ी से बड़ा कोई मुजरिम नहीं 192
- जुमा जुमा नमाज़ पढ़ने वालों के लिए तंबीह 194
- नमाज़ अल्लाह के ध्यान से पढ़ो वरना! 194
- अल्लाह वालों के नज़दीक बादशाहों की अहमियत 195
- मैंने तुम्हें मुफ़्ती नहीं बनाया 196

- चार कामों का एहतिमाम करो 197
- क़ुरआन ने पत्थर दिल को मोम कर दिया 198
- यह ऐसा कलाम है जो पहाड़ को भी रेज़ा रेज़ा कर दे 200
- यह किसी इन्सान का कलाम नहीं हो सकता 201
- क़ुरआन की तासीर 202
- तीसरा काम दुआ कसरत से करो 204
- तेरी हाय मुझे बड़ी पसन्द है 204
- अमानत में ख़्यानत की सज़ा 205
- चौथा काम हलाल कमाओ 207
- खट्टे और मीठे की पहचान 208
- किसी की रोज़ीं छीन कर अपनी रोज़ी बनाना 208
- लाखों रियाल अल्लाह की राह में क़ुर्बान कर दिए 209
- जब तक हराम पेट में रहेगा परेशानी बढ़ती रहेगी 211
- तेरे रोने ने रिज़्क़ के दरवाज़े खुलवा दिए 211
- हराम कमाई से कलिमा नसीब नहीं हुआ 212
- अमानतदार हवलदार की दर्दनाक कहानी 213
- पाँचवा काम जो मारे उसे फूल दो 213
- इबादत में सबसे अफ़ज़ल इबादत अख़्लाक़ है 213
- दुश्मनों को दोस्त बनाने का नुस्ख़ा 215
- मैंने अख़्लाक़ को देखकर इस्लाम क़बूल किया 215
- अख़्लाक़ की वजह से दुश्मन क़दमों में गिर गया 216
- कामिल ईमान मगर कैसे? 216
- छठा काम अल्लाह की मख़्लूक़ की ख़िदमत करो 217
- अच्छे माहौल की अहमियत 218
- गुमराही के माहौल में ईमान की हिफ़ाज़त करने वाले का वाक़िआ 219
- अमरीकी डाकू और सुन्नत की इत्तिबा 219

- अल्लाह की नाफ़रमानी करके ग़म न होना कैसी बेवफ़ाई है 220
- मौलवी साहब का तबलीग़ी शख़्स से शिकवा 221

O O O

सुकून की तलाश

- दुनिया मच्छर का पर है 222
- जन्नत का क़ीमती दुपट्टा 224
- कामयाबी का एक ही रास्ता है 224
- अल्लाह की चाहत को अपनी चाहत बना लो 225
- रुपए पैसे के ग़ुलाम न बनो 226
- सुकूने दिल! मगर कैसे? 227
- जंगे हुनैन में बड़ाई का इज़्हार और उसका अंजाम 227
- शहरी और जंगली कुत्ते का मुनाज़रा 228
- अल्लाह की नाराज़गी की निशानियाँ 230
- जब बादल से आवाज़ आई 230
- अल्लाह से ग़फ़लत क्यों? 232
- नेक बन्दों पर मसाएब में हिकमत 233
- अल्लाह के दुश्मनों पर माल की कसरत क्यों? 233
- सबसे बड़ी हलाकत तौबा किए बग़ैर दुनिया से चले जाना 234
- दुनिया बेसुकूनी की दलदल है 235
- सबसे ज़्यादा ख़ुशी का दिन तबाही का दिन कैसे बना? 236
- दोज़ख़ का एक झोंका ज़िन्दगी भर की ख़ुशियों को ख़ाक में मिला देगा 238
- काफ़िरों के पास दुनिया की कसरत की वजह 238
- एक वाक़िआः एक मूसा अलैहिस्सलाम का सवाल और एक हदीस 239

- मुसलमान पर तंगी 240
- सबसे ज़्यादा मुसीबतों में रहने वाले की जन्नत में खुशी 241
- ज़िन्दगी भर अय्याशी की मगर सुकून नहीं मिला, वाक़िआ 242
- अल्लाह को मनाए बग़ैर हम कटी हुई पतंग हैं 244
- दुनिया और आख़िरत के मसाईल का हल 245
- सुकूने दिल का रास्ता 246
- अगर मेरी मानोगे तो दुनिया बारिश की तरह तुम पर बरसेगी 247
- तेरा ग़ुलाम तेरे दर पर हाज़िर है! वाक़िआ 248
- तुम एक बार पुकारोगे मैं दस बार जवाब दूँगा 249
- नमाज़ से बीमारी दूर होगी (वाक़िआ) 249
- अल्लाह का फ़रमान मुझे छोड़कर कहाँ जा रहा है? 249
- सदक़ा मुसीबतों को दूर कर देता है 250
- सख़ावत के पहाड़ 250
- सुकून तो सिर्फ़ मुझसे दोस्ती करने में है 251

O O O

फ़ज़ाईल दावत व तलबीग़

- अल्लाह और उसके रसूल की तारीफ़ करना सीखो 254
- झूठी तारीफ़ पर ईनाम का वाक़िआ 255
- अल्लाह को बन्दे का सब से पसन्दीदा अमल 256
- इंसानियत को अल्लाह का तआरुफ़ कराओ 257
- अल्लाह की अज़मत दिल में उतार देने का वाक़िआ 257
- अल्लाह की इम्तियाज़ी सिफ़त रब्बुल आलमीन 259
- हर मुसलमान से तौबा करवाओ, इसी को ओढ़ना और बिछौना बना लो 260

- हम तो पैदाईशी हुज़ूर के नाएब हैं 262
- अज़ान के ज़रिए तबलीग़ पर अल्लाह का ईनाम 263
- अल्लाह के रास्ते का अज्र 264
- जन्नत की हूर से शादी करने का रास्ता 264
- तुम्हें ख़बर भी है वह तुम्हें किन हाथों से गले लगाएंगी 265
- दस करोड़ महीने की इबादत का सवाब 266
- सत्तर साल की इबादत से अफ़ज़ल अमल 266
- तीस ग़ुलाम आज़ाद करने से अफ़ज़ल अमल 267
- मच्छर के पर के बराबर भी गुनाहों की माफ़ी 267
- बाप बेटी के आँसू का वाक़िआ 268
- दीन को गले लगाना इज़्ज़त का ज़रिया है 269
- दीन के लिए इतना फिरो की मौत आ जाए 270
- नबी वाला दर्द पैदा करो 270
- मेरे नबी ने इस दीन के लिए कैसी ज़िल्लत बर्दाश्त की 271
- एक ने थूका दूसरे ने गिरेबान फाड़ा वाक़िआ 271
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यहूदी के इस्लाम लाने पर ख़ुशी 272
- जिस्म के टुकड़े कर दिए मगर दीन पर आँच न आने दी 273
- आँसू थे कि थमते ही न थे 274
- अल्लाह के लिए नई दुल्हन को भी छोड़ दिया 276
- जिस रब के एहसानत शुमार नहीं किए जा सकते उसको ख़ुश करने का आसान और अफ़ज़लतरीन काम 276
- दीन के लिए सूली पर लटकने का वाक़िआ 278
- दीन के लिए गोश्त को हड्डियों से जुदा कर दिया गया 279
- ख़ूबसूरत शाएरा भी अल्लाह के लिए छोड़ दी 279
- दीन के लिए भाई की लाश घोड़ों तले रौंद डाली 280
- तेरे दीन के लिए घोड़े समुंद्र में भी ले जाने को तैयार हूँ 281
- दीन की ख़िदमत पर अल्लाह की मदद का वायदा 282

- अल्लाह की नाफ़रमानी से बचने का ईनाम 283
- सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की तरह अपनी क़ब्र अल्लाह के रास्ते में बना लो 285
- मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की क़ुर्बानी 286
- दीन के लिए इमाम अहमद बिन हंबल रह० की क़ुर्बानी 287
- जिस गिरजे में बैतुल मुक़द्दस पर क़ब्ज़े की मीटिंग हुई आह! 289
- चिल्ला कहाँ से लाए हो? (सवाल व जवाब) 290
- फ़रमाने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु चिल्ला लगा लो (फ़ायदा रहेगा) 291
- गुनाहों की दलदल से रहमत के समुंद्र तक 292
- बीस लाख रुपए के ज़ेवर पहनने वाले की तौबा 292
- अमरीका जाना हमारी हिदायत का ज़रिया बन गया 295
- फ़्रांस की जमाअत का सच्चा वाक़िआ 296
- दुआ की कसरत हिदायत का ज़रिया कैसे बनी? 297
- आशिक़ का जनाज़ा बड़ी धूम-धाम से निकला (वाक़िआ) 298
- मौलवी फ़ारूक़ साहब का ख़्वाब 300
- हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद में 301
- गूंगों की जमाअत 303
- तबलीग़ की मेहनत न करने के नुक़सान 304
- क़बीले के क़बीले मुसलमान हो गए 305
- इस्लाम से मुझे प्यार है मगर 305
- नमाज़ का पढ़ना हिदायत का ज़रिया बन गया 306
- सुन्नत का एहतिमाम मुझे मुसलमान कर गया 307
- सोलह लाख का नुक़सान कैसे हुआ 307
- सौ साल बाद अज़ान गूँजी है 308
- उम्मत का दर्द पैदा करो 309

- तबलीग़ फ़र्ज़ या सुन्नत? 310
- अल्लाह के घर में पहली बार जाना हुआ 311
- बैतुल्लाह का पड़ौस होते हुए भी दूरी है 311
- लब पर मेरे ज़िक्र हो या रब तेरा हर घड़ी 312
- तबलीग़ में मौक़ा शनासी की अहमियत का वाक़िआ 313
- तबलीग़ के फ़ज़ाइल व अहमियत 313
- तुम्हारी आह वाह ने शाह जी को हिलाकर रख दिया 314
- उम्मत के ग़म में रोना सीखो 315
- अपने ही हाथों इस्लाम पर कुल्हाड़ी मत चलाओ 315
- हुज़ूर वाले ग़म को अपना ग़म बना लें 317
- तीन अरब रुपए कहाँ से आए? 318
- हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब कांधलवी रह०और फ़िक्रे उम्मत 320

O O O

क़ब्र की अंधेरी रात

- अल्लाह का पैग़ाम 322
- क़यामत ने की तैयारी कब करोगे? 323
- गुलशन तेरी यादों का महकता ही रहेगा 324
- आज कौन बादशाह है? 325
- अल्लाह मुझे बचा! औलाद को जहन्नम में डाल दे 326
- मरकर मर जाते तो मस्अला आसान था क़ब्र में 326
- कीड़ों की चादर 327
- दुनिया एक ख़्वाब है 329
- फ़क़ीर, बादशाह मगर क़ब्र एक ही 329
- दुनिया जन्नत से ग़ाफ़िल न कर दे 330
- तीन भाईयों की कहानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी 331

- पहले भाई की आह व फ़ुगां 332
- दूसरे भाई की आह व फ़ुगां 333
- तीसरे भाई की आह व फ़ुगां 334
- दो बादशाहों की जुदाई का वाक़िआ 334
- उमैया बिन ख़लफ़ के ऐतिराज़ पर अल्लाह पाक का जवाब 337
- सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का विसाल 338
- हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के दर्द भरे शे'र 338
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बस्ती पर गुज़र 340
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मुर्दों से सवाल व जवाब 341
- क्या मौत को भूल गए, जहन्न को भूल गए? 343
- महमूद ग़ज़नवी रह०, "वीरान खंडरों से इबरत पकड़ो" 343
- सोने चाँदी के महल में रहने वालों को भी मौत का प्याला पीना पड़ा 344
- बारह मुल्कों का बादशाह मगर मौत ने उसे भी नहीं छोड़ा 346
- दिलों की सख़्ता कब दूर होगी? 347
- जितनी अय्याशी कर लो मगर मौत ज़रूर आएगी, 347
- बद आमाल आदमी और अज़ाबे क़ब्र 349
- रुस्तम-ए-हिन्द की क़ब्र 350
- यह बेवफ़ाई कब तक करते रहोगे शराब का नशा भी एक दिन ख़त्म हो जाता है 351
- जिस ज़िन्दगी को मौत खा जाए वह भी कोई ज़िन्दगी है 351
- गोदू पहलवान की कहानी 352
- डिप्टी कमिश्नर की मौत 353
- क्या क़ब्र का अंधेरा भूल गए 355
- मेरे बन्दो तू मुझे क्यों गुस्सा दिलाता है? 355
- मैं तुझसे ग़ाफ़िल नहीं हूँ 356

- बंगले बनाने वालों से अल्लाह की नाराज़गी 357
- जवानी की इबादत 359
- यहया बिन अकसम रह० की क़ाबिले रश्क मौत 359
- सहाबा की क़ब्रें बनती गयीं और दीन फैलता गया 360
- इक्कीस आदमियों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम ही मालूम न था 361

○ ○ ○

अल्लाह के नाफ़रमानों का इबरतनाक अंजाम

- अल्लाह तआला से कोई चीज़ भी छिपी हुई नहीं 363
- अल्लाह काएनात का एक ज़र्रा भी नहीं छिपा हुआ 364
- अपने ही पेशाब में डूब गए 366
- क़ौमे आद की हलाकत 367
- क़ौमे समूद की नाफ़रमानी और अज़ाब 369
- क़ौमे शुएब का दहशतनाक अंजाम 370
- अल्लाह के तीन अज़ाब 371
- मेरे बन्दे तेरी एक एक हरकत मेरे सामने है 372
- दिल को तोड़ने वाले बुरे आमाल 373
- मेरे बेटे याद रख अल्लाह देख रहा है 374
- हम बेकार पैदा नहीं हुए 374
- आज जो करना है कर ले मगर कल!!! 375
- क़यामत की निशानियाँ 377
- लोगों से तौबा करवाओ 378
- अल्लाह की ढील का नाजाएज़ फ़ायदा न उठाओ 379
- ग़ाफ़िल बहुत बड़ा ज़ालिम है 381
- मौसीक़ी ज़वाल का बड़ा सबब 381

- हराम छोड़ा हर जगह इज़्ज़त मिल गई 382
- दुनिया जाने वाला घर है 382
- अल्लाह का खाकर उसकी नाफ़रमानी करना अच्छा नहीं है 383
- मन चाही छोड़ दो 384
- नर्स की मरीज़ से इल्तिजा आप मुझसे शादी कर लें 387
- अल्लाह के लिए ख़ूबसूरत को ठुकरा दिया! हुस्न को छोड़ा तमग़ा यूसुफ़ मिल गया 388
- मैं कैसा लग रहा हूँ? 389
- नहीं ख़ुश करेंगे नफ़्स को ऐ दिल तेरे कहने से 390
- अल्लाह की मदद 392
- ख़ालिक़ की नाफ़रमानी से मर जाना बेहतर है 393
- सुन लो मैं देख रहा हूँ 394
- हम तो कुत्तों से ज़्यादा बेवफ़ा हैं 395
- अल्लाह की रहमत के झोंके 396
- अल्लाह से यारी लगा लो 397

O O O

नदामत के आँसू

- काएनात की वुसअत 399
- पानी अल्लाह की क़ुदरत की निशानी 402
- छिपकली के उल्टे चलने पर ग़ौर करो 403
- आम की जगह तरबूज़ लटके होते तो? 404
- बिल्ली की तर्बियत कौन कर रहा है? 404
- इस बच्चे को किसने सिखाया 405
- क़ुर्बान जाऊँ मैं तेरी क़ुदरत पर 406
- बूट पालिश करने वाला आईन्सटाईन से अक़्लमंद 407
- अल्लाह कौन है? 407

- फीके पानी से मीठे आम पैदा होना 408
- बादल अल्लाह तआला की क़ुदरत का नमूना 409
- अल्लाह को नाराज़ करना बहुत बड़ा ज़ुल्म है 410
- तू तौबा कर फिर देख मेरी रहमत 411
- अल्लाह के नाफ़रमानों के लिए ख़ुशख़बरी 412
- ज़मीन व आसमान के बराबर गुनाह और अल्लाह की माफ़ी 413
- माथों को सज्दों से सजा लो 414
- अल्लाह का पसन्दीदा बोल अल्लाह मेरी तौबा! 415
- मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ तू आ तो सही! 416
- तू मिल गया तो सब मिल गया 416
- इधर तौबा उधर मग़फ़िरत का परवाना 417
- आज शैतान भी अल्लाह से उम्मीद लगाए बैठा है 418
- नाफ़रमानी के बावजूद अल्लाह की करम नवाज़ी तो देखिए 418
- मैं तेरे इन्तिज़ार में बैठा हूँ 419
- घोड़े से वफ़ादारी सीखो 420
- लाख बार गुनाह! लाख बार तौबा 421
- गुनाहगार की तौबा पर अल्लाह की ख़ुशी 422
- शैतान की स्कीम 422
- मैं तुझे अज़ाब देकर क्या करूंगा 423
- आँसुओं की करामत 424
- मैं तो माँ से भी ज़्यादा मेहरबान हूँ 425
- माँ से ज़्यादा प्यार करने वाला कौन? 426
- एक गुलूकार की तौबा का मुहब्बत भरा वाक़िआ 427
- गुनाहगार बन्दे की तौबा का हैरतअंगेज़ वाक़िआ 428
- जादूगरी छोड़ी तमग़ा-ए-शहादत मिल गया 431

- इधर तौबा इधर मग़फ़िरत का परवाना मिल गया 433
- तू रूठता रहेगा मैं मनाता रहूँगा 434

O O O

दुनिया से मुहब्बत का इबरतनाक अंजाम

- अल्लाह तआला हम से क्या चाहता है? 438
- अल्लाह जो चाहता है वही होता है 439
- हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहत 441
- इन टूटी हुई इमारतों से इबरत लो 442
- यह चार दिन की चाँदनी है 443
- यह ज़िन्दगी चन्द गिने चुने साँसों का नाम है 444
- ज़मीन का एक झटका दुनिया के नशे को ख़त्म कर सकता है 445
- दुनिया को हवस की नज़र से मत देख सबसे पहले कीड़ा क़ब्र में तेरी आँख को!!! 446
- दुनिया की मक्कारी से इबरत लो 446
- दुनियावी ज़िन्दगी की मौत 447
- दुनिया का आशिक़ कौन? 448
- दुनिया की मज़म्मत पर इमाम शाफ़ई रह० का 449
- जगह जी लगाने की यह दुनिया नहीं है 449
- दुनिया से मुहब्बत और मौत की दस्तक 450
- जहन्नम के शोले 452
- दुनिया से मुहब्बत का अंजाम 453
- अहमक़ कौन? 454
- हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ईमान लाने पर सहाबा की ख़ुशी 455

- मिट जाने वाले घर से दिल लगाना 456
- हमारे मसाइल का हल 457
- दुनिया का नक़्शा थोड़ी देर का है 458
- टूट जाने वाले जहाँ से इबरत लो 459
- बर्बाद बस्ती वालों का क़िस्सा 460
- जन्नत का यक़ीन होता तो अल्लाह की नाफ़रमानी न करते 461
- हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल मुक़द्दस फ़तेह करने के लिए तशरीफ़ ले जा रहे हैं किस हाल में? 463
- अपना आप दे दे अपनी मुहब्बत दे दे, रुपए का नशा 464
- भोलू पहलवान का वाक़िआ 464
- राबिया बसरिया रह० से फ़रिश्तों का सवाल तुम्हारा रब कौन है? 465
- तेरी सादगी पर रोने को जी चाहता है 466
- मौलाना तारिक़ जमील के वालिद का रोना 467
- मैंने तो दुनिया बनाने वाले से नहीं मांगी 468
- हम ऐसे मुसाफ़िर हैं जिनकी कोई मंज़िल नहीं 468
- अल्लाह की तरफ़ दौड़ो 469
- उमर रहमतुल्लाहि अलैहि और ख़ौफ़े ख़ुदा 470
- तीन बर्रे आज़म का बादशाह है मगर कपड़े फटे पुराने 471
- अल्लाह की चाहत पर ज़िन्दगी गुज़ारने का ईनाम 474
- मोमिन की मौत का मंज़र 475

○ ○ ○

जन्नत की परी चेहरा हूर

- अल्लाह से यारी लगा लो 478
- जिसे अल्लाह न मिला उसे कुछ भी न मिला 479

- अल्लाह से दोस्ती करने का ईनाम 480
- अल्लाह की मुहब्बत का ज़ेवर पहन लो 481
- बोसीदा होने वाली दुनियां भी कोई दुनिया है 482
- भंगी को क्या ख़बर की ख़ुशबू क्या है (वाक़िआ) 484
- अल्लाह के दीदार की नेमत को याद किया करो 484
- चन्द दिन की अय्याशियों के लिए जहन्नम को ख़रीदने वालों की आवाज़ 485
- जन्नत की दौड़ 486
- जन्नतुल फ़िरदौस के पुल 486
- जन्नत के ख़ूबसूरत लिबास 487
- जन्नत की दिलकश नहरें 488
- जन्नत के ख़ूबसूरत घर 488
- जन्नत में हाफ़िज़ क़ुरआन के लिए बेमिस्ल नहर का ईनाम 490
- जन्नत को किस का शौक़ है? 490
- दुनिया के धोके से निकल जाओ 491
- जन्नत की हूरों के हुस्न का मंज़र 492
- एक लाख अन्दाज़ से चलने वाली हूर 493
- चालीस साल उसके हुस्न को देखता रहेगा 494
- सत्तर बरस जन्नत को देखने में गुज़र जाएंगे 495
- वह हूर जिसके हुस्न पर जन्नत की हूरें आशिक़ हैं 495
- आँख से आँख न मिलाने का ईनाम 497
- दावत व तबलीग़ करने वालों के लिए ख़ासुल-ख़ास हूर 497
- तीन महीन बेहोश रहने की वजह 499
- हूर के हुस्न को देखकर जिब्राईल अलैहिस्सलाम भी धोके में आ गए 499
- दुनिया की औरत अफ़ज़ल है या जन्नत की हूर 500
- हूर ऐना के आशिक़ नौजवान का वाक़िआ 502

- तुम में ऐना कौन है? 503
- अल्लाह ने मुझे ऐना से मिला दिया 506
- जहन्नम से निकलने वाले जन्नती का अनोखा वाक़िआ 506
- अदना जन्नती की जन्नत 509
- अस्सी हज़ार क़िस्म के खाने 510
- चालीस साल गुमसुम परी चेहरे का नज़ारा 511
- अल्लाह के दीदार की लज़्ज़त 512
- तुम्हारा रब तुमसे मुस्कुराता हुआ मिलेगा 513
- आज इबादत ख़त्म हो गई अब तुम्हारे मज़े के दिन हैं 514
- अल्लाह का जन्नतियों से मज़ाक 515
- आज जो मांगना है मांगो 516
- दुनिया का बर्तन छोटा है यहाँ लज़्ज़तें कहाँ हैं? 516
- दुनिया से बग़ावत पर अल्लाह का ईनाम 517
- इस उम्मत के लिए सवाब की हद 518

O O O

तक़्वा क्या है?

- अल्लाह वालों की सिफ़्त 525
- आज अल्लाह नाराज़ है 525
- आँख और कान के गुनाह 526
- अल्लाह की क़ुदरत 529
- माँ-बाप की अज़मत 529
- पानी अल्लाह की निशानी 531
- सुकून की तलाश 532
- इश्के इलाही की आग 534
- सारी रात रोते रोते गुज़र गई 535

- एस०पी० की गुर्बत का हाल 536
- प्रोफ़ेसर के कुत्ते की कहानी 537
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और फ़िक्रे उम्मत 538
- कर्बला का क़िस्सा गा गाकर न सुनाया करो 539
- मग़रिबी तहज़ीब 540
- क़ौमे आद और अल्लाह का अज़ाब 541
- इमाम हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत 544
- मिम्बरे नबवी का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई में रोना 545
- बहनों को विरासत ज़रूर अदा करो 546
- बाहर बड़े नेकी नमाज़ी अन्दर से बदतमीज़ 547
- ख़ातिमुल अंबिया और दौड़ का मुक़ाबला 547
- महबूब की अनोखी सुन्नत 549
- मुहब्बत से दिल फ़तेह करो 550
- पत्थर दिल इंसान 550
- सुन्नत की अहमियत 551
- अल्लाह तआला का सुनना और देखना 552
- दीन मे पाबन्दी है सख़्ती नहीं 553
- इज़्ज़त हासिल करने का रास्ता 553
- चियोन्टी अल्लाह की निशानी 554
- एक वाक़िआ 557
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुस्न का मंज़र 558
- अख़्लाक़ का जनाज़ा मत निकालो 558
- शक्लों से घर आबाद नहीं होते 558
- वाक़िआ 559
- ख़ुश्क वादियों की तरह हो गए हमारे इल्मी हल्क़े 560
- फूल बरसाओ पत्थर न बरसाओ 561

- तलीफ़ा 561
- ख़ानदानी मंसूबाबंदी (फ़ैमली प्लानिंग) हक़ीक़त या अफ़साना 563
- सच्ची तौबा कर लो 565

○ ○ ○

ईद उसकी जिसने अल्लाह को राज़ी किया

- ज़िन्दगी की क़द्र करो 568
- अल्लाह से दूरी की वीरानियाँ 569
- सूद लेना माँ से ज़िना से ज़्यादा बड़ा गुनाह है 570
- हम तो आग और पत्थरों की बारिश के मुस्तहिक़ हैं मगर 571
- हमारा रब हमसे नाराज़ है उसको मना लो 572
- क़यामत का ज़लज़ला 573
- वह ऐसा दिन है जो तुम्हारे सारे करतूतों को खोल देगा 574
- दोस्तियों को दुश्मनियों में बदलने वाला दिन 574
- मौत का पंजा 576
- माँओं से ज़्यादा मेहरबान अल्लाह 576
- ईद उसकी है जिसने अल्लाह को राज़ी किया 577
- यह कैसा नाफ़रमान शख़्स है? 578
- लुटा हुआ मुसाफ़िर 578
- हया की चादर पहन लो 579
- किस बात पर मुस्कुराते हो 580
- जो ग़फ़लत से निकल गया ईद उसकी है 581
- अल्लाह के वास्ते गुनाह छोड़ दो 581

- क़यामत की गर्मी से हिफ़ाज़त का बन्दोबस्त आज कर लो 583
- मरने वालों से इबरत लो 584
- यह दुनिया मच्छर का पर है 585
- मेरे बन्दे तू मुझे छोड़कर कहाँ जा रहा है? 587
- वह कौन सी चीज़ है जो मुझसे दूरी का सबब बनी 590
- मुझे बता तो सही मैंने क्या चीज़ रोकी तुझसे? 590
- अल्लाह की गुलामी को इख़्तियार कर लो 591
- अल्लाह ही अल्लाह 593
- अल्लाह का हम से मुतालबा 593
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एहसान 594
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़ोहद 595
- हज़रत आएशा की फ़ाक़ाकशी 595
- बाप बेटी का रोना 596
- तुम्हें शर्म नहीं आती नबी की सुन्नत को ज़िक्र करते हुए? 597
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुनिया से बेरग़बती 59
- काएनात का नबी और टाट की चादर 599
- पेड़ की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का एक मंज़र 600

○ ○ ○

नमाज़ और नौकर

- दुनिया का मालदार सबसे बड़ा फ़क़ीर क्यों? 601
- तुम्हारा मालिक तुम्हें बुलाता है और तुम बैठे रहते हो 603
- चालीस साल में एक नमाज़ भी नहीं पढ़ी 605

- अल्लाह की करम नवाज़ी तो देखो 606
- अल्लाह को राज़ी करने का ग़म 607
- ज़मीन अल्लाह की निशानी 608
- पेड़ अल्लाह का अजूबा 608
- सूरज अल्लाह की क़ुदरत का शाहकार 609
- हवा अल्लाह की कारीगरी का नमूना 609
- कल ख़ूबसूरती का नमूना थे आज बदसूरती का 611
- जिस अल्लाह को ज़वाल नहीं उससे दिल लगाओ 612
- अल्लाह से बग़ावत करते हुए शर्म नहीं आती 613
- सोचो तो सही किसको नाराज़ कर रहे हो? 613
- ज़मीन अल्लाह की निशानी 614
- समुंद्र अल्लाह की निशानी 615
- क्या काएनात अपने आप बन गई? 615
- अंग्रेज़ अपने आपको बंदर की औलाद समझते हैं शायद 616
- काएनात का वजूद साइंसदानों की नज़र में 617
- तारिक़ जमील साहब से यहूदी का बिलवास्ता सवाल 618
- काएनात का ख़ालिक़ कौन? 619
- हर मुसीबत उसके हुक्म से हटती है (मिसालें) 621

O O O

क़यामत की निशानियाँ

- ज़िन्दगी गुज़ारने के रास्ते 624
- शैतानी रास्ता 625
- नेक शख़्स की मौत पर ज़मीन का ग़मगीन होना 626
- गुनाहों से बचने पर अल्लाह की ख़ुशी 627
- कहाँ गई हया की चादर 628
- अल्लाह की हिफ़ाज़त का नमूना 630
- मौत का वक़्त लिखा जा चुका है 631

- क़यामत कौन से दिन आएगी? 631
- क़यामत उसके लिए जो गुनाहगार है 632
- वह दिन जब बैतुल्लाह को भी तोड़ दिया जाएगा 633
- दोज़ख़ की चीख़ 634
- जब चाँद सितारों को तोड़ दिया जाएगा 636
- पानी को आग लगा दी जाएगी 636
- अल्लाह की क़ुदरत का अदना नमूना हिमालय पहाड़ 637
- शैतान की मौत का दिन 638
- इज़राईल अलैहिस्सलाम की मौत 640
- कहाँ गए बड़े-बड़े बादशाह? 641
- गंदगी का ढेर भी कभी अकड़ता है 641
- दुनिया मे राहत कम ग़म ज़्यादा है 642
- दुनिया के लिए अल्लाह को न भुला देना 643
- अल्लाह की नाफ़रमानी का अंजाम 644

O O O

ईमान व यक़ीन के हैरान करने वाले असरात

- कभी किसी को मैंने भूखा रखा, फिर तू हराम क्यों खाता है? 647
- रोज़ी देने वाला हक़ीक़त में अल्लाह है 648
- मैं बादशाहों का बादशाह हूँ 649
- सबसे दिल हटा लो 650
- सबसे कटकर अल्लाह से जुड़ जाओ 652
- पत्थर दिल इंसान 652
- मनमानी छोड़! रब चाही इख़्तियार कर 653

- अल्लाह को राज़ी कर लो 654
- अल्लाह की क़ुदरत! सौ बरस तक सुला दिया 654
- यहूदी का सवाल! सौ साल बड़ा भाई कौन? 656
- अस्हाबे कहफ़ का क़िस्सा तीन सौ बरस नींद 657
- अस्हाबे कहफ़ की हिफ़ाज़त 657
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश का अनोखा वाक़िआ 659
- पैदाईशी बच्चे की तक़रीर 661
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश का अनोखा वाक़िआ 662
- रहम दिली का करिश्मा 663
- अजाएबाते क़ुदरत 664
- यही मेरी माँ है 665
- मूसा अलैहिस्सलाम की अपने घर में वापसी 666
- आग का ढेर जला न सका मगर क्यों? 666
- लंगड़े मच्छर का कारनामा 668
- दवा में शिफ़ा नहीं मगर 669
- छोटे से पत्थर की आवाज़ 670
- मेरा अल्लाह गवाह है 671
- एक हज़ार कुफ़्फ़ार और तीन सौ तेरह सहाबा की लड़ाई 672
- हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का दरिन्दों के नाम ख़त 675
- अल्लाह की मदद का नज़ारा 676
- आँख का क़ीमा बन गया मगर रौशनी लौट आई 676
- तुमने तलवार देखी है हाथ नहीं देखा 677
- हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का अल्लाह पर तवक्कुल 678
- तू अल्लाह से क्यों नहीं मांगता? 679
- हीरे से भरी हुई किश्ती 680

- अल्लाह के बन गए तो समुंद्र भी नहीं डुबोएगा 680
- अल्लाह को साथ लोगे तो काम बनेंगे 681
- मौत से ज़िंदगी का सफ़र 682
- पैर चाटने वाला शेर 682
- अल्लाह को मना लो 683
- साठ हज़ार काफ़िरों के मुक़ाबले में साठ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम 684
- जंगे बदर में अल्लाह की मदद 685
- हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु की करामत समुंद्र पर हुकूमत 686
- करामत! उंगली के इशारे से क़िला गिर गया 687
- हज्जाज बिन यूसुफ़ का अल्लाह पर यक़ीन 688
- कलिमा तैय्यबा की क़ुव्वत 689
- अल्लाह से दोस्ती का फ़ायदा 690
- ईमान सबसे बड़ी दौलत 691
- अल्लाह तआला का इंसान से शिकवा 692
- ईमान के "नूर" की निशानी 692
- मेरे बंदे तेरा रोना मुझे अच्छा लगता है 693
- अल्लाह से बग़ावत अच्छी नहीं 694

O O O

आज अल्लाह नाराज़ है

- क्या तुम अपने आप पैदा हो गए? 696
- काएनात की इब्तिदा 697
- दुनिया को जन्नत बनाने वाले साइंसदानों की बेबसी 698
- ज़मीन पर अल्लाह की क़ुदरत का निज़ाम 698
- कौन पागल कहता है कि काएनात अपने आप बन गई? 699
- पाँच करोड़ ऐटम बम और सूरज 700

- ऐटम बम की तबाही 701
- फ़िज़ा में गैसों का तनासुब 701
- साइंस अल्लाह की तलाश 702
- अल्लाह के एहसानात 704
- अल्लाह की क़ुदरत समुंद्र में जहाज़ का न डूबना 705
- अल्लाह की निशानियाँ 706
- कोई तो है जो निज़ामे हस्ती को चला रहा है 708
- अल्लाह तआला का मुहब्बत भरा शिकवा 710
- अल्लाह की बड़ाई 711
- अल्लाह की बंदों से मुहब्बत 711
- अल्लाह के ख़ज़ानों की वुसअत 712
- करोड़ो माँओं से ज़्यादा प्यार 713
- लाओ मेरे जैसा हसीन क़द्रदान 715
- जुनैद जमशेद और सुकून की तलाश 715
- जुनैद के रोने ने मुझे भी रुला दिया 716
- कुत्ते से वफ़ादारी सीखो 717
- आख़िरत की फ़िक्र 718
- क़यामत का मंज़र 719
- यह दुनिया के करतूत 720
- अल्लाह के वास्ते आख़िरत का सौदा न करो 720
- जहन्नम की हौलनाकियाँ 721
- अच्छे आमाल का ईनाम 722
- जन्नत का अंगूर 724
- जन्नत के ख़ूबसूरत महल 725
- चकोर की नख़रीली चाल का तज़्करा 725
- जन्नत की हूर के अनोखे अंदाज़ 726
- हाय हाय मज़लूम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु 728
- आज सच्ची तौबा कर लो 729

- बंदों की तौबा पर अल्लाह की ख़ुशी 730
- अल्लाह को ख़ुदा न कहा करो 730
- इमाम ग़ज़ाली रह० की क़ुर्बानी 732
- मौलाना तारिक़ जमील का अपरहण 733
- जब से आँख खुली तेरे दीन को मिटते देखा! (दुआ) 734

○ ○ ○

जज और वकीलों से ख़िताब

- मुँह पर तारीफ़ करने के एहकाम 736
- ज़ुल्म से बचो, इंसाफ़ करो 737
- मुशरिक को अपना रहबर न बनाओ 739
- अद्ल ख़त्म हो गया तो काएनात जहन्नम का नमूना 741
- अल्लाह तआला से तअल्लुक़ हज़ारों ऐटम बम से क़ीमती 743
- हमारा अल्लाह है न कि असबाब 743
- हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का पहलवान से मुक़ाबला 744
- नबी के बेटी के घर का फ़ाक़ा 746
- अंग्रेज़ों की साज़िश! क़ुरआन से दूर करो 747
- हमारा अल्लाह हम से क्या चाहता है? 748
- क़ुरआन अल्लाह का ज़िंदा मौजिज़ा 749
- सुपर कम्प्यूटर और क़ुरआन 750
- क़ुरआन की हक़्क़ानियत का अदना नमूना 751
- कामयाब कौन, नाकाम कौन? 753
- मज़लूम की आह से बचो 754
- बदतरीन शख़्स कौन? 755
- अपने ही ख़ून से नहाने वाले आले रसूल 756
- रिज़्क़ में बरकत का नुस्ख़ा 757

- बंदों की तौबा पर अल्लाह की खुशी 730
- अल्लाह को खुदा न कहा करो 730
- इमाम ग़ज़ाली रह० की क़ुर्बानी 732
- मौलाना तारिक़ जमील का अपरहण 733
- जब से आँख खुली तेरे दीन को मिटते देखा! (दुआ) 734

○ ○ ○

जज और वकीलों से ख़िताब

- मुँह पर तारीफ़ करने के एहकाम 736
- ज़ुल्म से बचो, इंसाफ़ करो 737
- मुशरिक को अपना रहबर न बनाओ 739
- अद्ल ख़त्म हो गया तो काएनात जहन्नम का नमूना 741
- अल्लाह तआला से तअल्लुक़ हज़ारों ऐटम बम से क़ीमती 743
- हमारा अल्लाह है न कि असबाब 743
- हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का पहलवान से मुक़ाबला 744
- नबी के बेटी के घर का फ़ाक़ा 746
- अंग्रेज़ों की साज़िश! क़ुरआन से दूर करो 747
- हमारा अल्लाह हम से क्या चाहता है? 748
- क़ुरआन अल्लाह का ज़िंदा मौजिज़ा 749
- सुपर कम्प्यूटर और क़ुरआन 750
- क़ुरआन की हक़्क़ानियत का अदना नमूना 751
- कामयाब कौन, नाकाम कौन? 753
- मज़लूम की आह से बचो 754
- बदतरीन शख़्स कौन? 755
- अपने ही ख़ून से नहाने वाले आले रसूल 756
- रिज़्क़ में बरकत का नुस्ख़ा 757

- इंसाफ़ का मिसाली वाक़िआ 758
- मज़लूम का साथी अल्लाह है 760
- शाने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 761
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिसाली पैदाईश 762
- अंग्रेज़ी तहज़ीब की नहूसत 763
- अंग्रेज़ की साज़िश वेटर की पगड़ी 764
- मैं (तारिक़ जमील) तबलीग़ में कैसे लगा 765
- फिरता हूँ यार को जाने जानाँ किए हुए 766

O O O

अल्लाह तआला का ख़ौफ़

- हर लम्हा मौत से क़रीब कर रहा है 767
- क़यामत की हौलनाकी 768
- क़ौमे आद पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा 772
- तीन मन वज़न उठाने वाला दूसरों का मोहताज 774
- क़ब्रिस्तान वालों की उदासी 775
- एक दिन मरना है आख़िर मौत है 776
- मेरे भाईयो! होश में आओ 777
- क्या मौत के बाद तौबा करोगे? 778
- मौत सारे महबूबों को जुदा कर देगी 779
- हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और फ़िक्रे आख़िरत 780
- क़ब्र की आग 781
- ग़फ़लत भरी ज़िंदगी से तौबा करो 782
- तौबा कर लो इससे पहले कि मौत आ जाए 784

O O O

- कुत्ते की वफ़ादारी से सबक़ सीखो 807
- तल्हा जन्नती कैसे बने? 808
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजिज़ा 810
- अल्लाह की मदद व नुसरत का हसूल कैसे? 811
- मौलाना तारिक़ साहब की तवाज़े 811

O O O

मिसाली शादी

- मकड़ी अल्लाह की क़ुदरत का नमूना 814
- दीन पर मुकम्मिल अमल करो 816
- फ़हश-हरकात से बचो 817
- यूरोप की तहज़ीब तबाही के रास्ते पर 819
- यूरोपियन लड़की की पुकार काश ऐसा मर्द मुझे मिलता 820
- मज़लूम औरत 821
- निकाह करने पर अल्लाह का ईनाम 823
- निकाह की अहमियत 824
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्ने मुबारक 825
- सबसे ऊँची शान वाला नबी 826
- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्न हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़बान से 827
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कसरत से निकाह क्यों किए? 827
- सादगी वाला निकाह 828
- हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती का मंज़र 829
- बीवी को इतनी मुहब्बत दो कि उसे अपना घर याद ही न आए 831

- सास और बीवी के झगड़े और उनका हल 832
- निकाह में दीनदारी देखो मालदारी मत देखो 832
- अख़्लाक़ से घर बनते हैं 833
- अपनी ज़बान पर ताला लगा दो 834
- बदमाश धोबन की कहानी 835
- मीठे बोल का जादू 835
- आपके मिसाली अख़्लाक़ का अनोखा वाक़िया 836
- अख़्लाक़ सीखो और सिखाओ 837
- औरत नाज़ुक शीशे की तरह है 838
- बदअख़्लाक़ी से घर बर्बाद होते हैं 838
- जहन्नम से डरो 839
- हुस्न हो तो ऐसा 840
- मरने वालों से सीख लिया करो 843
- दुनिया की दौड़ लगाने वालों का अंजाम 844
- क़यामत का ख़ौफ़नाक दिन 845
- देहाती के नदामत भरे शे'र 849
- अल्लाह का खाकर उसी के बाग़ी मत बनो 853
- जन्नत के सरदारों की फ़ाक़ा भरी ज़िन्दगी 854
- रूठे हुए आक़ा को मना लो 855
- चौबीस घंटे अल्लाह की नाफ़रमानी करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती 857
- तौबा कर लो! यह न हो वह अज़ाब का कोड़ा बरसा दे 858

O O O

पॉप सिंगरों से ख़िताब

- तौबा करो 861

- जन्नत में मछली और बैल का मुक़ाबला 862
- बन्दों के हक़ अदा करने में कोताही से बचो 863
- क़ौमे आद की बुढ़िया का शिकवा 865
- दुनिया की तारीख़ का अनोखा वाक़िआ 867
- सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की दीन के लिए क़ुर्बानी 868
- जुनैद जमशैद का ढाई करोड़ रुपया ठुकरा देने का वाक़िआ 870
- दीन डंडे से नहीं फैला 870
- लोगों के ऐबों को छिपाओ ज़ाहिर न करो 871
- मौलवियों की क़ुर्बानी 872
- एक डाक्टर का मौलवी पर ऐतिराज़ 873
- इंजीनियर का इश्काल 873
- हुस्ने अख़्लाक़ की करामत 874
- मैं फ़ाहिशा से सहाबिया कैसे बनी? 874
- सत्ताईस साल से अल्लाह की नाफ़रमानी करने वाले की तौबा का वाक़िआ 876
- तबलीग़ की मेहनत के नतीजे 877
- फ़नकारा की तौबा का वाक़िआ 879
- जुनैद जमशेद की तौबा का वाक़िआ 880
- शैतानी ज़िन्दगी को छोड़ दो 880
- तन्हाइयों में जहन्नम का मुराक़बा करो 882
- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मत के ग़म में रोना 883
- अल्लाह को प्यारी है क़ुर्बानी 884
- करबला के क़िस्से को गा गाकर मत सुनाया करो 885

○ ○ ○

पत्थर दिल इन्सान

- मैंने तुम्हें नबियों वाले काम के लिए चुना है 890
- अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से मिला दो 892
- आप को नबुव्वत कब मिली? 893
- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूरानी बचपन 895
- मौजिज़ात ही मौजिज़ात 895
- ख़ंजर लगे किसी को तड़पते हैं हम अमीर 898
- मुसलमान जाग जाओ वरना! 899
- मौत से मुहब्बत करने वाले 900
- शरीफ़ की बातें 901
- दुनिया को हुस्न देने वाला खुद कैसा होगा? 905
- अल्लाह की तख़्लीक़ के शाहकार 906
- अजाएबात ही अजाएबात 907
- तबलीग़ भूला हुआ सबक़ 909
- अल्लाह का तार्रुफ़ कराना हमारा काम है 909
- उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत 910
- शहादते हुसैन मुहर्रम में क्यों? 911
- ख़ून ही ख़ून 913
- तेरा रब बड़ा ही मेहरबान है 914
- दुनिया इम्तिहान की जगह है सज़ा की जगह नहीं 918
- आज अल्लाह को मना लो 919
- मेरे ग़ैर की मुहब्बत को न बसाओ 920
- अमल कम शबाश ज़्यादा 921

- नाचने वाला और मुसल्ले पर खड़ा होने वाला बराबर नहीं हो सकते 922
- ख़ानदाने नबुव्वत के बहत्तर शहीद 923
- अल्लाह बड़ा ही क़द्रदान है 924
- दास्ताने ग़म 924
- आँसुओं की करामात 925
- रौशन पेशानियाँ 925
- देहाती के दर्द भरे अशआर 926
- आपकी नसीहत मुलाज़िमों से अच्छा सुलूक करना 928
- दोज़ख़ की चीख़ 928
- अंबिया और जहन्नम का ख़ौफ़ 929
- शराब के जाम 931
- जन्नत की हूर "लाएबा" का हुस्न 932
- सत्तर साल तक गाना सुनने वाले कौन? 933
- जन्नत के ख़ूबसूरत परिन्दे 934
- जन्नत के लज़ीज़ खाने 935
- आख़िरत की तैयारी कर लो 936
- अच्छे अख़्लाक़ पैदा करो 937
- मौलाना जमशेद मद्दे ज़िल्लाहु का ख़ौफ़े ख़ुदा 938
- ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह है 939
- मासूम बच्ची के मोटे मोटे आँसू 940
- माँ की आँखों की ठंडक बनो 940
- माँ का नाफ़रमान जहन्नम में जाएगा 941
- बेहयाई को आग लगा दो 941
- तबलीग़ को अपना मक़सदे ज़िन्दगी बना लो 942
- नमाज़ में सुस्ती न किया करो 944

- ज़कात देने में कोताही न करो 945
- क़यामत की निशानी! औलाद वालिदैन पर ज़ुल्म करेगी 946
- क़ुरआन से मज़ाक क़ुरआन ख़्वानी के ज़रिए 946
- हम दुआ मांगते नहीं पढ़ते हैं 947
- हमारी बदक़िस्मती जनाज़े की नमाज़ से महरूम औलाद 948
- तर्बियत औलाद का हक़ अदा करो 949
- माफ़ करना सीखो 949
- ऐब तलाश न करो 951
- अपनी मस्जिद से जमातों को मत धक्के दिया करो 951
- जन्नत के हसीन ज़ेवर 953
- दुआ 955

O O O

अल्लाह का तआरुफ़

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادي له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلي ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعني وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبي صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

अव्वल भी तू आख़िर भी तू

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह तआला हमेशा हमेश से है, बाक़ी तमाम मख़्लूक़ शुरू और आख़िर की पाबन्दियों से बन्धी और जकड़ी हुई है। अल्लाह तआला का तआरुफ यह है—

﴿هو الاول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شيء عليم.﴾

वह अव्वल है वह आख़िर है, वह ज़ाहिर है वह बातिन है और वह हर चीज़ का जानने वाला है।

अव्वल वह है जिसकी शुरूआत कोई नहीं और अल्लाह वह

ज़ात है जिसका कोई आख़िर नहीं। वह क़दीम है मगर दिशा से पाक है उसकी कोई दिशा नहीं,

﴿قديم بلا بداية و دائم بلا نهاية﴾

﴿وهو الذى فى السماء وفى الارض.﴾

वह अल्लाह आसमान पर भी है और ज़मीन पर भी है,

﴿اينما تولو فثم وجه الله.﴾

जिधर देखागे उधर अल्लाह ही अल्लाह है,

﴿لله المشرق والمغرب.﴾

पूरब भी अल्लाह का है पश्चिम भी अल्लाह का है,

﴿فاينما تولو فثم وجه الله.﴾

इधर देखो अल्लाह, उधर देखो अल्लाह।

इधर देखो अल्लाह उधर देखो अल्लाह, ऊपर देखो अल्लाह, नीचे देखो अल्लाह।

﴿سنريهم ايتنا فى الافاق.﴾

मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ काएनात में भी दिखाऊँगा।

﴿وفى انفسهم.﴾ तुम्हारी अपनी ज़ात में भी दिखाऊँगा। वह अल्लाह जिसके सामने ज़मीन व आसमान झुके हुए हैं।

ज़मीन आसमान का शहंशाह

जो ज़मीन आसमान का अकेला बादशाह हो, ﴿لا وزير﴾ न उसका कोई वज़ीर है, ﴿ولا مشير﴾ न उसका कोई सलाहकार है ﴿ولا مدبر﴾ न उसका कोई मदगार है, ﴿ولا شريك له﴾ न उसका कोई शरीक है, ﴿لا مثل له﴾ न उसका कोई मिस्ल है, ﴿لا ندله﴾ मुक़ाबिल उसका

कोई नहीं है, ﴿لا مثال له﴾ मुशाबेह उसका कोई नहीं है, ﴿لا شبيه له﴾ उस जैसा काएनात में कोई नहीं है, ﴿من قبل﴾ न उससे पहले कुछ है, ﴿من بعد﴾ न उसके बाद में कुछ है, न उसके ऊपर कुछ है न उसके नीचे कुछ है, ﴿بلا بداية﴾ शुरूआत से पाक, ﴿بلا نهاية﴾ आख़िर से पाक, ﴿بلا مكان﴾ मकान से पाक, ﴿بلا زمان﴾ ज़माने से पाक, ﴿اينما تولوا فثم وجه الله﴾ जेहत से पाक।

निराला बादशाह

शक्ल से पाक, रंग से पाक, ऐब से पाक, नींद से पाक।

﴿لا تاخذهٗ سنة﴾ ऊँघ से पाक,

﴿ولا نوم﴾ नींद से पाक,

﴿يطعم ولا يُطعم﴾ खाने से पाक, खिलाता है, देता है खुद लेने से पाक है।

﴿لا تراه العيون﴾ जिसको कोई आँख देख नहीं सकती,

﴿لا تخالطه الظنون﴾ जहाँ ख़्याल न पहुँच सके,

﴿لا يصفه الواصفون﴾ जिसकी कोई तारीफ़ न कर सके,

﴿لا تغيره الحوادث﴾ जिस पर कोई असर अन्दाज़ न हो सके,

﴿ولا يخشى الدوائر﴾ जो न किसी से डरे न झिझके,

﴿لا يسئل عما يفعل﴾ उसको कोई पूछ न सके,

﴿وهم يسئلون﴾ और हमारे किए हुए अमाल को वह सामने करके दिखा दे,

﴿احق من ذكر﴾ जिससे ज़्यादा बन्दगी के क़ाबिल कोई न हो,

﴿انصر من ابتغى﴾ जिससे बड़ा मददगार कोई न हो,

﴿الرؤف من ملك﴾ जिससे ज़्यादा मेहरबान कोई न हो,

﴿اجود من سئل﴾ जिससे बड़ा कोई सख़ी नहीं,

﴿الفرد لا نده﴾ अकेला है कोई उसका शरीक नहीं,

﴿العلی لا سمیع له﴾ इतना ऊँचा कि कोई उसके बराबर नहीं,

﴿الغنی لا ظهیر له﴾ ऐसा ग़नी कि कोई उसका मददगार नहीं,

﴿کل شیء هالك﴾ हर चीज़ फ़ना हो जाएगी,

﴿الا وجهه﴾ वह बाक़ी रहेगा,

﴿کل ملك زائل﴾ हर मुल्क को ज़वाल है,

﴿الا ظله﴾ उसका साया कभी नहीं ढलता,

﴿ولن تطاع الا باذنه﴾ अल्लाह की ताक़त के बग़ैर कोई उसकी इताअत नहीं कर सकता,

﴿ولن تعصی الا باذنه﴾ और अल्लाह से छिपकर कोई गुनाह नहीं कर सकता,

﴿تطاع فتشکر﴾ या अल्लाह तेरी मानते हैं तो तू खुश होता है, क़द्रदानी करता है,

﴿تعصی فتغفر﴾ या अल्लाह तेरी नाफ़रमानी करते हैं तू माफ़ करता है,

﴿اقرب شهید﴾ तू सबसे ज़्यादा क़रीब है,

﴿ادنی حفیظ﴾ तू सबसे बड़ा निगहबान है,

हिफ़ाज़त करने वालों में सबसे ज़्यादा क़रीब अल्लाह है,

﴿اقرب الیه من حبل الورید﴾ रगे जान से भी ज़्यादा क़रीब है,

﴿حلت دون النفور﴾ हमारे और हमारे इरादों के दर्मियान हाएल हो जाता है, अगर हमने चाहा और उसने न चाहा तो नहीं हो सकता अगर हमने न चाहा उसने चाह लिया तो हो जाएगा, हमने रोकना चाहा उसने करना चाहा, कर दिया, हमने करना चाहा उसने रोकना चाहा, रोक दिया।

हर ऐब से पाक कौन है?

﴿لا تاخذه سنة ولا نوم﴾ न सोता है न ऊँघता है,

﴿ما كان ربك نسيا﴾ न भूलता है,

﴿لا يضل ربى﴾ न भटकता है,

﴿ولا تنسى﴾ न चूकता है,

﴿ان ربكم الله﴾ बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है,

﴿الذى خلق السموات والارض﴾ जिसने ज़मीन व आसमान बनाए,

﴿فى ستة ايام﴾ छः दिन में,

﴿ففروا الى الله﴾ दौड़ो अल्लाह की तरफ़ जो कुल जहान का बादशाह है, अल्लाह वह बादशाह है जिसके मुल्क पर कोई आता नहीं, अल्लाह वह बादशाह है जिससे कोई टकराता नहीं,

﴿الملك لا شريك له﴾ बादशाह, शरीक कोई नहीं,

﴿الفرد لا ندله﴾ अकेला मिस्ल कोई नहीं,

﴿العلى لا سميع له﴾ ऊँचा, हमसर कोई नहीं,

﴿الغنى لا ظهير له﴾ ग़नी, मददगार कोई नहीं,

﴿المدبر لا مشير له﴾ मुदब्बिर, कोई उसका सलाहकार नहीं,

﴿القاهر لا معين له﴾ वह क़हहार और उसका कोई फ़ौज व लश्कर नहीं जिसके ज़रिए चढ़ाई करके छा गया बल्कि,

﴿له ما فى السموات والارض﴾ सारे जहानों का बादशाह है,

﴿يحى و يميت﴾ ज़िन्दगी और मौत का मालिक,

﴿وهو على كل شىء قدير﴾ हर चीज़ पर क़ादिर है,

﴿هو الاول﴾ वह अव्वल, ﴿والاخر﴾ वह आख़िर है,

﴿والظاهر﴾ वह ज़ाहिर है, ﴿والباطن﴾ वह बातिन है,

﴿وهو بكل شيء عليم﴾ वह हर चीज़ का जानने वाला है।

हर मुहताजी से पाक है

और वह ऐसा निराला बादशाह है जिसे न पहरे की ज़रूरत है, जिसे न हिफ़ाज़त की ज़रूरत है, जिसे न खाने की ज़रूरत है, जिसे न पीने की ज़रूरत है, जिसे न बीवी की ज़रूरत है, जिसे न बच्चों की ज़रूरत है, जिसे न जी लगाने के लिए किसी साथी की ज़रूरत है, जिसे न काम करने के लिए किसी मददगार की ज़रूरत है। वह अल्लाह है।

﴿لا يستعين بالشئ﴾ किसी से मदद नहीं लेता,

﴿لا يحتاج الى شئ﴾ किसी चीज़ का मुहताज नहीं,

﴿لا يضره شئ﴾ कोई चीज़ उसे नुक़सान नहीं पहुँचा सकती,

﴿لا ينفعه شئ﴾ कोई चीज़ उसे नफ़ा नहीं पहुँचा सकती, कोई चीज़ उससे भाग नहीं सकती, कोई चीज़ उससे लड़ नहीं सकती, किसी चीज़ का वह मुहताज नहीं है,

﴿خلق كل شئ فقدره تقديرا﴾ हर चीज़ उसके हाथ से बनी है,

﴿مالك كل شئ﴾ फिर हर चीज़ का मालिक है,

﴿خبير بكل شئ﴾ जानता है और अन्दर बाहर सारी काएनात उसके क़ब्ज़े में है,

﴿يتنزل الامرة بينهن﴾ आसमान पर भी अल्लाह का हुक्म चलता है, फिर वह अल्लाह ऐसा है न तो उसे घर की ज़रूरत है न उसे

मकान की ज़रूरत है,

﴿لا يحويه مكان﴾ किसी मकान में नहीं आता,

﴿لا تشتمل عليه الزمان﴾ किसी ज़माने की क़ैद में नहीं,

माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल से वह ऊपर है, हमें माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल में बाँधा। वह अपनी ज़ात में न हाल का मुहताज न माज़ी का मुहताज न मुस्तक़बिल का मुहताज न वह मकान का न छत का न दीवारों का न फ़र्श का मुहताज और इस सारे निज़ाम को चलाने में ﴿لا تأخذه سنة﴾ वह ऊँघता नहीं, ﴿ولا نوم﴾ सोता नहीं, ﴿ولا يؤده حفظهما﴾ वह थकता नहीं ﴿ما مسنا من لغوب﴾ जहाँ को बनाकर नहीं थका, निज़ाम को चलाकर नहीं थका फिर इस सारे निज़ाम को चलाते हुए वह ग़ाफ़िल नहीं ﴿لا تحسبن الله غافلا﴾ वह भूला नहीं, ﴿ما كان ربك نسيا﴾ वह ग़लत फ़ैसले नहीं करता ﴿لا يضل ربي﴾ और वह भूलकर फ़ैसले नहीं करता ﴿لا ينسى﴾।

अल्लाह के इल्म की बुलन्दी

फिर इस सारी काएनात में कोई चीज़ उससे छिपी हुई नहीं है,

﴿يعلم ما في البر والبحر.﴾ ज़मीन के अन्दर को भी जानता है पानियों के अन्दर को भी जानता है,

﴿سواء منكم من اسر القول﴾ कोई ज़ोर से बोले तो भी वह सुनता है आहिस्ता बोले तो वह भी वह सुनता है,

﴿من جهر به﴾ कोई ज़ोर से बोले तो भी वह सुनता है, ﴿مستخف بالليل﴾ कोई रात को छिप के चले तो वह भी देखता है, ﴿سارب بالنهار﴾ कोई दिन के उजाले में चले तो वह भी देखता है. अल्लाह अपनी बादशाही में बेमिस्ल है, बेमिसाल है।

वह, वह अल्लाह है जो सबको खिलाता है खुद खाने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको पिलाता है खुद पीने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको देता है खुद लेने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको पहनाता है खुद पहनावे से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको सुलाता है खुद सोने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको थकाता है खुद थकने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको मारता है खुद मौत से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको इम्तिहान में डालता है खुद आज़माइश से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबकी ज़रूरतें पूरी करता है खुद हर ज़रूरत से पाक है वह अल्लाह है जो सबको जोड़ा जोड़ा बनाता है खुद जोड़े से पाक है।

न उसकी कोई शबाहत है न उसका कोई मिस्ल न उसकी कोई मिसाल है न उसका कोई शरीक है न उसका कोई सलाहकार है न उसका कोई मुहाफ़िज़ है न उसका कोई मददगार है न वह किसी से दबता है न किसी से घबराता है न किसी से डरता है न कभी करके पछताया है न ख़ता खाई ﴿لا یضل ربی ولا ینسی﴾ करे तो भूलता नहीं करे तो ग़लत नहीं करता। वह अपने आपको माबूद कहलवाने में हमारी बन्दगी का मुहताज नहीं, अपने आपको अकबर और कबीर कहलवाने के लिए हमारी तकबीरों का और अज़ानों का मुहताज नहीं, अपनी तारीफ़ करवाने के लिए हमारी तस्बीह का मुहताज नहीं।

ख़्यालात से ऊँची ज़ात

कोई उसको माने या न माने वह हर हाल में पाक ज़ात है, हर

हाल में बुलन्द ज़ात है, हर हाल में बरतर ज़ात है, हर हाल में अज़ीम ज़ात है, हर हाल में वरा-उल-वरा ज़ात है,

﴿لا تدركه الابصار﴾ उसे न आँख देख सके,

﴿لا تخالطه الظنون﴾ उसे न ख़्याल पहुँच सके,

﴿لا تغيره الحوادث﴾ उसे न हादसात बदल सकें,

﴿لا يخشى الدوائر﴾ वह इन्क़लाबों से डरता नहीं,

﴿لا يصفون الواصفون﴾ तारीफ़ करने वाले उसकी तारीफ़ करके थक जाएं और उसकी तारीफ़ ख़त्म न हो, हमारी ज़बानें कट जाएं, ख़त्म हो जाएं, हमारे हाथ लिखते-लिखते टूट जाएं, हमारे क़लम घिस जाएं मगर अल्लाह की तारीफ़ ख़त्म नहीं हो सकती,

﴿ما كان معه من اله﴾ उसके मुक़ाबले में इलाह कोई नहीं,

﴿لم يتخذه صاحبة﴾ बीवी कोई नहीं, ﴿ولا ولدا﴾ बेटा कोई नहीं,

﴿ولم يكن له شريك فى الملك﴾ उसका शरीक कोई नहीं,

﴿ولم يكن له ولى من الذل﴾ कोई मददगार और मुईन और साथी नहीं, इसलिए अल्लाह ने कहा—

﴿فكبره تكبيرا﴾ उसी को कह अल्लाह तू बड़ा है, उसी की तस्बीह पढ़, उसी की किबरियाई का बोल बोल कि ये सारे बादशाह बौने हैं, मिट्टी के माधो हैं और ये पत्थर के बुत हैं जैसे लात व मनात से कुछ नहीं होता था आज के ऐटम बम से अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कुछ नहीं होगा, जैसे लात व उज़्ज़ा से कुछ नहीं होता था इसी तरह साइंस से अल्लाह के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता, मख़्लूक़ में अल्लाह ने ताक़त रखी है, अल्लाह छीन ले तो कौन दे सकता है?

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दहकती आग से हिफ़ाज़त

आग भड़कने वाली, जलने वाली, जलाने वाली, इब्राहीम अलैहिस्सलाम हवा में उड़ते हुए चले आ रहे हैं और सब टकटकी बाँधे हुए देख रह हैं कि अब जला, वह गिरा और वह जला और नीचे जाने तक हड्डियाँ भी नहीं मिलेंगी और उसी आग में ग़र्ज़ यह कि ऊपर से हुक्म आया ﴿كونوا بردا﴾ हो जा ठंडी बुझाया नहीं बादशाही कैसे पता चलती? ताक़त का कैसे पता चलता? बुझाया नहीं आग आग है मगर कहा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए ﴿بردا﴾ ठंडी हो जा तो शोलों ने यूँ लपक के अपने दामन में ले लिया, इब्राहीम यूँ नहीं गिरे "गड़प" बल्कि शोलों ने उठा लिया और यूँ ऐसे नीचे लाए जैसे माँ अपने बच्चे को गोद से बिस्तर पर लिटाती है किसी मख़्लूक़ की ताक़त ज़ाती है? कोई ऐटम अपनी ताक़त से ताक़तवर बन चुका है? वह लोहे को मोम बना दे, मोम को लोहा बना दे, तिनके को ऐटम बम बना दे ऐटम बम को तिनका बना दे। उसकी ताक़त है और ऐसी सर्दी की लहर उठी कि फिर दूसरा हुक्म आया ﴿وسلاما﴾ ऐ क्या कर दिया तूने? ठंडक की तकलीफ़ पहुँचा दी, सलामती वाली बन कि न गर्मी लगे न सर्दी लगे तो वह आग, आग है औरों के लिए और वही आग गुलज़ार है ख़लील के लिए इसलिए कि अल्लाह की ताक़त है, ﴿ان القوة لله جميعا﴾।

अल्लाह की बड़ाई अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी

अल्लाह का नबी अपने अल्लाह की तारीफ़ में कह रहा है:

वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में ला महदूद है,

﴿احق من ذکر﴾ याद करना है तो अकेला है तो वह अकेला ही इस क़ाबिल है,

﴿احق من عبد﴾ बंदगी करनी है तो वह अकेला ही इस क़ाबिल है,

﴿انصر من ابتغی﴾ मदद चाहनी है तो वह अकेला है,

﴿اجود من سئل﴾ सख़ावत देखनी है तो वह अकेला है,

﴿اوسع من اعطی﴾ बेइन्तिहा देने में वह अकेला है,

﴿الملك لا شريك له﴾ अपनी बादशाही में वह अकेला है,

﴿الفرد لا ندله﴾ अपने वजूद में वह अकेला है,

﴿لا يحتاج الى شيء﴾ न किसी का मुहताज है,

﴿لا يغلبه شيء﴾ कोई चीज़ उस पर ग़ालिब नहीं आती,

﴿لا يؤده شيء﴾ कोई चीज़ उसे थकाती नहीं,

﴿لا يعزب عنه الشيء﴾ कोई चीज़ उससे छिप नहीं सकती, ﴿لا يخفى على الله من شيء﴾ उसके लिए अंधेरा भी बराबर, उजाला भी बराबर।

इन्सान अल्लाह की क़ुदरत का नमूना

माँ के पेट के अन्दर तीन अंधेरों में एक नुत्फ़े पर तजल्ली को डालता है। तीन अंधेरों में आँखें बनाता है, मुँह को बनाता है और उसकी खाल बनाता है, उसकी पलक बनाता है, भवें बनाता है,

नाख़ुन बनाता है, उंगलियाँ बनाता है, दिल बनाता है, फेफड़े बनाता है, दिमाग़ बनाता है।

और एक वक़्त में एक बच्चा नहीं बन रहा है, एक वक़्त में करोड़ों माँओं के पेट में बच्चे और बच्चियाँ बन रहे हैं।

हमें ग़ाफ़िल से वास्ता नहीं, आजिज़ से वास्ता नहीं कि वह हमारा कुछ नहीं कर सकता।

﴿وما هم بمعجزين﴾ तुम में ताक़त है तो मुझे आजिज़ करके दिखाओ, चलो मुझे धोका देकर दिखाओ कि किसी की फाइल बदल दो कि मैंने तो क्या ही नहीं।

﴿لا يضل ربي ولا ينسى﴾ तेरा रब भूलता नहीं, तेरा रब ग़लत फैसले नहीं करता, ﴿لا تاخذه سنة﴾ ऊँघता नहीं ﴿ولا نوم﴾ सोता नहीं,

﴿وما كان ربك نسيا﴾ भूलता नहीं, ﴿لا يؤده حفظهما﴾ थकता नहीं, खाता नहीं खिलाता है, सोता नहीं सुलाता है, पीता नहीं पिलाता है, मरता नहीं मारता है,

﴿حي قبل كل حي﴾ हर ज़िन्दा से पहले ज़िन्दा है,

﴿وحي بعد كل حي﴾ हर ज़िन्दा के बाद ज़िन्दा है,

﴿وحي ليس كمثله حي﴾ ऐसा ज़िन्दा कि कोई ज़िन्दा उस जैसा ज़िन्दा नहीं है,

﴿وحي لا يشبهه حي﴾ ऐसा ज़िन्दा कि कोई ज़िन्दा उसके मिस्ल नहीं है,

﴿لا شريك له﴾ शरीक से पाक है,

﴿لم يتخذه صاحبا﴾ बीवी से पाक है,

﴿ولا ولدا﴾ बेटे से पाक है।

अल्लाह तआला का सिलसिल-ए-नसब

अहले अरब को दस-दस, बीस-बीस पुश्तों के नाम मुँह ज़बानी याद होते थे, मेरा बाप, दादा और फ़लाँ, फ़लाँ सारी नस्लों के नाम जानते थे, घोड़ों की नस्लों के नाम जानते थे। एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहने लगे ﴿ما ذا النسب لنا ربك﴾ हमें तो अपने बाप दादा का हसब व नसब मालूम है, तेरे रब का नसब क्या है? इससे पहले कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बोलते, अल्लाह खुद बोला। जिब्राईल अलैहिस्सलाम पलक झपकने में अर्श से चले और फ़र्श पर आए, या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने अपना नसबनामा भेजा है, आओ क़ुरैश मेरे रब का नसबनामा सुनो!

﴿قل هو الله احد. الله الصمد. لم يلد. ولم يولد. ولم يكن له كفوا احد.﴾

मेरा रब अकेला है, समद का तर्जुमा बेनियाज़ सही नहीं है बल्कि ग़नी है, समद उसे कहते हैं कि जिसके बग़ैर किसी का काम न बने और जिसका काम सबके बग़ैर बन जाए, अल्लाह बेनियाज़ होता तो ज़मीन व आसमान बर्बाद हो जाते, वह तो सबसे ज़्यादा हमारे नाज़ उठाता है।

ज़मीन तड़पने लगती है कि या अल्लाह मेरे ऊपर इतने गुनाह हो रहे हैं कि मेरा सीना जल गया है, मुझे इजाज़त दे दें कि मैं फट जाऊँ, मैं इनको घरों समेत निगल जाऊँ, समुंद्र इजाज़त मांगते हैं या अल्लाह इजाज़त दे दे लगाम ढीली छोड़ दे मैं इन्हें ग़र्क़ कर दूँ, फ़रिश्ते तड़प जाते जाते हैं और कुछ गुनाह तो ऐसे होते हैं जब इन्सान करता हे तो फ़रिश्ते डरकर ज़मीन से ऊपर चले जाते

हैं कि अब अल्लाह के अज़ाब को कोई चीज़ नहीं रोक सकती, अल्लाह तआला फिर भी नाज़ उठाते हैं और वे गुनाह हर हर जगह हो रहे हैं फिर भी अल्लाह तआला ज़मीन को लेकर चल रहा है, बेनियाज़ नहीं बल्कि समद है। समद उसे कहते हैं जिसके बग़ैर किसी का काम न बन सके और जो अपना काम सबके बग़ैर बना ले।

बादशाहों का बादशाह कौन है?

﴿هو الذى فى السماء اله﴾ ज़मीनों का भी बादशाह अल्लाह है,

﴿وفى الارض اله﴾ आसमानों का बादशाह भी अल्लाह है,

﴿يرسل الرياح مبشرات﴾ हवाओं का बादशाह अल्लाह है,

﴿هو الذى سخر البحر﴾ समुंद्रों का बादशाह अल्लाह है,

﴿وسخر لكم الانهار﴾ दरियाओं का बादशाह अल्लाह है,

﴿ما كان لكم ان تنبتو شجرها﴾ पेड़ों का ख़ालिक़ और मालिक अल्लाह है,

﴿وما تخرج من ثمرات من اكمامها﴾ फल-फूल और ग़ल्लों का मालिक अल्लाह है,

﴿وجعلنا السماء سقفا محفوظا﴾ आसमान की छत का मालिक अल्लाह है,

﴿خلق سبع سموات طباقا﴾ सातों आसमान ऊपर नीचे बनाने वाला अल्लाह है,

﴿يتنزل الامر بينهن﴾ फिर उनके अन्दर अपनी हुकूमत को क़ाएम करने वाला अल्लाह है,

﴿لله الامر﴾ उसी की हुकूमत है ﴿من قبل﴾ जिसकी कोई इब्तिदा नहीं है, ﴿من بعد﴾ जिसकी कोई इन्तिहा नहीं है।

न उसकी ज़ात की कोई शुरूआत और आख़िर है न उसके मुल्क की कोई शुरूआत और आख़िर है।

﴿سبح لله ما فی السموات والارض وهو العزیز الحکیم﴾

सारी काएनात उसकी है।

कोई है मेरे अलावा?

अल्लाह का रसूल कह रहा है–

﴿انت الاول فلیس قبلك الشیء﴾ तू ही तू है तुझसे पहले कुछ नहीं,

﴿انت الاخر فلیس بعدك الشیء﴾ तू ही तू है तेरे बाद कुछ नहीं,

﴿انت الظاهر﴾ तू सबसे बुलन्द है, ﴿لیس فوقك الشیء﴾ तुझसे ऊपर कोई नहीं,

﴿انت الباطن﴾ तू अन्दर में उतरकर ऐसा छिपा हुआ है, ﴿لیس دونك الشیء﴾ तुझसे छिपा हुआ कोई नहीं, ﴿الملك﴾ तू वह बादशाह है ﴿لا شریك لك﴾ जिसका कोई शरीक नहीं, ﴿الفرد﴾ तू वह अकेला है ﴿لا ندلك﴾ जिसका कोई मिस्ल नहीं, जिसका कोई हमसर नहीं।

और खुद अल्लाह कहता है ﴿هل تعلم له سمیا﴾ मेरे बन्दे तेरा रब तो नहीं जानता कि उसका हमसर कोई है तुम बता दो अगर तुम्हें कोई पता हो कि यह तेरी टक्कर का है, तुम्हारे इल्म में है तो तुम बता दो, न कोई ज़मीन में उसका मुक़ाबिल न आसमान में उसका कोई मुक़ाबिल न ख़ला में उसका कोई मुक़ाबिल न पूरब व पश्चिम में कोई उसका मुक़ाबिल है।

कोई है जो अल्लाह की कारीगरी में ऐब निकाल सके?

﴿الم تر كيف خلق الله سبع سموات طباقا﴾

देखो तो सही रब कौन है जिसने सात आसमान ऊपर नीचे बना दिए और अल्लाह तआला फ़रमाता है—

﴿هل ترى من فطور﴾ तुझे मेरे आसमान में कोई कमी नज़र आती है?

﴿فارجع البصر﴾ एक दफ़ा नहीं बार बार देखो,

﴿ثم ارجع البصر﴾ फिर बार बार देखो,

﴿كرتين ينقلب اليك البصر خاسئا وهو حسير﴾

तू जितनी बार मेरे आसामान को देखेगा, मेरा आसमान ऐब से पाक है। तेरी निगाह मेरे आसमान में कोई ऐब नहीं दिखा सकती और मैंने ही आसमान को थामा हुआ है और कोई आसमान को टूटने से रोक नहीं सकता। अल्लाह की क़ुदरत कैसी है?

﴿يمسك السموات والارض ان تزولا﴾ ज़मीन व आसमान को थामा,

﴿الشمس تجرى لمستقرها﴾ सूरज को थामा,

﴿الشمس والقمر والنجوم مسخرات بامره﴾ सूरज चाँद सितारे उसके ताबे हो के चले, अर्श थामा ﴿رب العرش العظيم.﴾ मलाईका को थामा ﴿لا يعصون ما امرهم ويفعلون ما يؤمرون.﴾ समुंदरों को मज़बूती से अपने हुक्म में बांधा, ﴿وهو الذى سخر البحر﴾ दरियाओं पर क़ब्ज़ा जमाया ﴿وسخر لكم النهر﴾ पहाड़ों पर अपने अम्र को साबित किया ﴿والجبال ارسها﴾ कड़वे मीठे पानी के चश्मे चलाए ﴿مرج البحرين يلتقين﴾ दोनों को आपस में मिलने न दिया। ﴿بينهما برزخ لا يبغيان﴾

﴿هذا عذب فرات سائغ شرابه وهذا ملح اجاج.﴾

एक मीठा है एक कड़वा है बीच में कोई आड़ नहीं, रुकावट नहीं, दीवार नहीं लेकिन मीठा कड़वे में नहीं आता, कड़वा मीठे में नहीं आता। यह उसकी क़ुदरत है।

अल्लाह के इल्म की वुसअत

मालिक कैसा है?

﴿لله ملك السموات والارض وما فيهن.﴾

ज़मीन व आसमान अल्लाह का, ﴿رب المشرق﴾ पूरब अल्लाह का, ﴿والمغرب﴾ पश्चिम अल्लाह का,

﴿رب المشرقين ورب المغربين.﴾ उत्तर पूरब, दक्षिण पूरब, उत्तर पश्चिम और दक्षिण पश्चिम सब का सब अल्लाह का है।

﴿كل قد علم صلاته وتسبيحه.﴾ पानी और ज़मीन, अर्श व फ़र्श, ज़र्रा व पहाड़, तिनका और जंगलात, हवाई और फ़िज़ाई, ख़लाई और ख़ाकी, नूरी और नारी, सारी की सारी मख़्लूक़ अल्लाह की नमाज़ और तस्बीह बयान कर रही है।

अल्लाह तआला अपने बन्दों से किसी हाल में, किसी पल में, किसी लम्हे में भी ग़ाफ़िल नहीं है। सिर्फ़ बन्दे ही नहीं बल्कि काएनात का ज़र्रा ज़र्रा, चप्पा-चप्पा उसके सामने है और उसकी हरकात व सकनात से बाख़बर भी है ﴿انها ان تك مثقال حبة من خردل﴾ राई के दाने का कोई हज़ारवाँ हिस्सा हो ﴿مثقال من حبة من خردل﴾ एक तो राई ऐसी छोटी होती है फिर उसका भी कोई हिस्सा, इतनी छोटी भी कोई चीज़ है? ﴿فتكن في صخرة﴾ पहाड़ों की ग़ारों

में छिपा हुआ हो ﴿فی السموات﴾ या इस लम्बी और लामहदूद फ़िज़ा में कहीं तैर रहा हो ﴿او فی الارض﴾ या ज़मीन की ज़ुल्मतों में कहीं पड़ा हुआ हो, ﴿یات بها الله﴾ अल्लाह उसको खींचकर बाहर लाने पर ताक़त रखता है और ﴿احاط بصره بجمیع المرئیات﴾ उसकी नज़र काएनात पर पूरी तरह हावी है।

अल्लाह पाक की क़ुदरते कामिला

﴿سواء منکم﴾ उसके लिए बराबर है,

﴿من اسر القول﴾ सरगोशी करे या मेरी तरह ज़ोर से बोले,

﴿مستخف باللیل﴾ रात के अंधेरों में छिपकर चले,

﴿وسارب بالنهار﴾ या दिन के उजाले में चले ये सब उसकी नज़र के सामने बराबर है,

﴿سواء منکم من اسر القول﴾ सरगोशी की,

﴿ومن جهر به﴾ ज़ोर से बोला,

﴿مستخف باللیل﴾ रात के अंधेरों में छिपा,

﴿وسارب بالنهار﴾ दिन के उजाले में चला, ये सब अल्लाह तआला के सामने खुली किताब की तरह है,

— ﴿لا یعزب عن ربك من مثقال ذرة﴾ एक ज़र्रे के बराबर उससे पोशीदा नहीं है।

वह तो काली च्युँटी को भी देखता है

हदीस मुबारक में है ﴿احاط بصره بجمیع مرئیاته﴾ अल्लाह तआला की नज़र सारी काएनात को देख रही है, मिसाल के तौर पर

﴿يرى دبيب النملة السوداء على الصخرة السماء في ليلة الظلماء﴾

एक काला पत्थर है, पहाड़ भी काला है, फिर रात भी काली है फिर ऊपर जंगल छा चुका है, पत्ते पड़े हुए हैं, घास है, पुराली है, काला पत्थर, काला पहाड़, काली रात फिर ऊपर से घास वग़ैरह है नीचे एक काली च्युँटी जा रही है अल्लाह तआला अर्श पर है, च्युँटी फ़र्श पर है बीच में इतने पर्दे हैं च्युँटी के चलने से काले पत्थर पर एक लकीर पड़ रही है अल्लाह तआला कह रहा है मैं उस लकीर को भी देख रहा हूँ।

कभी आप च्युँटी को उठाकर देखें उसके पाँव ही नज़र नहीं आते वह लकीर क्या बनाएगी? वह तो नरम मिट्टी पर चले तो लकीर मुश्किल से बने, तो पहाड़ों पर और पत्थरों पर लकीर कैसे बनेगी? अगर बड़ी बड़ी दूरबीनें लगाई जाएं तो भी बनती नज़र न आएगी, अल्लाह तआला अर्श पर कह रहा है कि मैं उसे देख रहा हूँ।

रात का अंधेरा, पहाड़ का अंधेरा, घास और पुराली का अंधेरा, जंगल का अंधेरा, च्युँटी का अपना अंधेरा, और उसकी हक़ीर काली टांगों का अंधेरा, मुझ से यह लकीर नहीं छिप सकता वह ऐसा देखने वाला है।

वह सुनने वाला कैसा है? ﴿واسروا قولكم﴾ आहिस्ता बोलो ﴿او اجهروا به﴾ ज़ोर से बोलो ﴿انه عليم بذات الصدور﴾ तुम्हारे अन्दर के छिपे हुए भेद को भी जानता है ﴿يعلم السر﴾ तुम चुपके-चुपके बोलो ﴿واخفى﴾ तुम दिल ही दिल में बोले अल्लाह कहता है मैं यह भी सुन लेता हूँ।

तुम्हारे साँस को निकलता देखे, उतरता देखे,

तुम्हारे साँस की आवाज़ को सुने, दिल की धड़कन को सुने,

रगों में चलते ख़ून की आवाज़ तक को सुने,

पत्ता टूटे उसकी टूटने की आवाज़ को सुने,

ज़मीन पर गिरे उसके गिरने की आवाज़ को सुने,

च्युंटी की पुकार को सुने और आवाज़ सुने, फ़रियाद सुने,

ज़मीने के नीचे चलने वाले कीड़े की आवाज़ और सदा को सुने,

सात समुंद्र की तह में चलने वाली मछली की पुकार को सुने, सदा सुने,

रेत का एक-एक ज़र्रा, ज़मीन का एक-एक ज़र्रा, पेड़ का एक-एक पत्ता।

﴿يعلم ما في البر والبحر﴾ ज़मीन के अन्दर जो कुछ है अल्लाह के इल्म में है,

लम्बे से लम्बा बर्मा तक़रीबन पाँच किलोमीटर है जिसने ज़मीन को खोदा है। इससे आगे ज़मीन इससे ख़ोदी नहीं जा सकती और यह पचास किलोमीटर तक है ज़मीन और मिट्टी और आगे आग है और ये सिर्फ़ पाँच किलोमीटर तक पहुँचे हैं। आगे इनके सिर्फ़ अन्दाज़े हैं।

ऐसे ही समुंद्र में इनके अन्दाज़े हैं तह तक तो नहीं जा सकते और नीचे जाएं तो पानी ही दबाकर, पिचका कर रख दे। इनके नीचे तो आबदोज़े भी नहीं जा सकतीं। पानी उनको ऐसे दबाकर रख दे और ऊपर निकलने ही न दे।

﴿ما تسقط من ورقة الا يعلمها﴾ पत्ता भी गिरे तो तेरा अल्लाह जाने,

﴿عدد ورق الاشجار﴾ सारी काएनात के पेड़, पेड़ों के पत्ते उनकी मजमूई तादाद अल्लाह के इल्म में है।

﴿عدد قطر الامطار﴾ बारिश, बारिश के क़तरे, उन क़तरों की

मजमूई तादाद अल्लाह के इल्म में है।

﴿يعلم ماء البحار﴾ सारे समुंद्रों में कितना पानी है अल्लाह के इल्म में,

﴿مثاقيل الجبال﴾ सारे पहाड़ों का कितना वज़न है अल्लाह के इल्म में है,

﴿لا تواعي منه السماء سماء﴾ आसमान को कोई चीज़ उससे छिपा नहीं सकती,

﴿ولا ارض ارضا﴾ ज़मीन उससे कोई चीज़ छिपा नहीं सकती,

﴿ولا جبل ما في وارعيه﴾ पहाड़ अपने ग़ार में छिपी हुई चीज़ें उससे छिपा नहीं सकते।

﴿ولا بحر ما في قعره﴾ और समुंद्र अपने अंधेरों में और उसकी तह में पड़ी हुई चीज़ों को अल्लाह से नहीं छिपा सकते। यह अल्लाह का इल्म है।

दुनिया भर के क़लम अल्लाह की तारीफ़ लिखने से आजिज़

मेरे भाईयो! कौन अल्लाह की तारीफ़ कर सकता है। अल्लाह तआला खुद अपनी सिफ़ात बयान करता है–

﴿ولو كان البحر مدادا﴾ अल्लाह कहता है कि समुंद्र को स्याही बना दो,

﴿والبحر يمده من بعده سبعة ابحر﴾ सात समुंद्र भी स्याही बन जाएं,

﴿ولو ان ما في الارض من شجرة اقلام﴾ सारी दुनिया के पेड़ लेकर क़लम बना दिए जाएं, एक संदल के पेड़ से कितने क़लम बनेंगे?

समुंद्र स्याही, पेड़ क़लम, इन्सान और जिन्नात लिखने बैठ जाएं, फ़रिश्ते भी आकर लिखना शुरू करें तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं—

﴿لنفد البحر قبل ان تنفد كلمات ربي، ولو جئنا بمثله مددا.﴾

समुंद्र सूख जाएंगे, क़लम टूट जाएंगे मेरी तारीफ़ ख़त्म नहीं होगी, इतने क़लम और स्याही और ले आएं तो वह भी ख़त्म हो जाएंगे।

अल्लाह वह ज़ात है जिसे सारा जहान पुकारे, ﴿اولكم﴾ पहले पुकारें, ﴿اخركم﴾ पिछले पुकारें, ﴿انسكم﴾ इन्सान पुकारें, ﴿جنكم﴾ जिन्नात पुकारें, ﴿حيكم﴾ ज़िन्दा पुकारें, ﴿ميتكم﴾ मुर्दा पुकारें, ﴿رطبكم﴾ तर पुकारें, ﴿يابسكم﴾ ख़ुश्क पुकारें, ﴿صغيركم﴾ छोटे पुकारें, ﴿كبيركم﴾ बड़े पुकारें, ﴿ذكركم﴾ मर्द पुकारें, ﴿وانثكم﴾ औरतें पुकारें, ﴿في صعيد واحد﴾ एक मैदान में खड़े होकर पुकारें।

अल्लाह सबसे यह नहीं कहेगा कि बारी बारी बोलो। यह नहीं कहेगा सिर्फ़ अरबी बोलो कि मेरी ज़बान अरबी है। अल्लाह तआला फ़रमाएगा बोलो बोलो, पश्तू भी बोलो, उर्दू भी बोलो, हिन्दी भी बोलो, पंजाबी भी बोलो, सिन्धी भी बोलो, बलूची भी बोलो, बरोही भी बोलो, अंग्रेज़ी भी बोलो, फ्रांसीसी भी बोलो, लातेनी भी बोलो। काएनात की सब ज़बानों में अपने रब को पुकारो, मैं तुम्हारा वह सुनने वाला रब हूँ कि मुझे बारियाँ लगाने की ज़रूरत नहीं, मैं तुम्हारी चीख़ पुकार अलग अलग सुनूँगा, समझूँगा।

﴿لا تغلطه كثرة المسائل﴾ तुम सबका इकठ्ठा बोलना मुझे ग़लती में नहीं डालेगा कि उमर क्या बोला और ख़ालिद क्या बोला

अकरम क्या बोला और सईद क्या बोला तुम सबको अलग अलग सुनूँगा और यह सुनकर,

﴿لا يشغله سمع عن سمع﴾ एक का सुनना मुझे दूसरे से ग़फ़िल नहीं करता,

﴿ولا يلهيه قول عن قول﴾ एक को सुनते हुए दूसरे कोई नहीं भूलता,

﴿لا يمنعه فضل عن فضل﴾ एक को देते हुए दूसरे को यह नहीं कहता कि ज़रा इन्तिज़ार करो, ख़ज़ाना ख़ाली है, अब तुम कल आना, तुम्हें कल दिया जाएगा।

ऐसी ज़र्बदस्त शान वाले अल्लाह को न मानना, उसकी नाफ़रमानी करना, इसमें हमारी ही हलाकत है, हमारा ही नुक़सान है।

और अल्लाह का नबी कह रहा है ﴿غدا الحساب ولا عمل﴾ कल हिसाब होने वाला है और उस वक़्त अमल कोई नहीं कर सकता।

अंधेरी कोठरी में बल्ब ले जाओ

तो जो सबसे बड़ी आफ़त और मुसीबत है कि इन्सान दुनिया को छोड़कर जाता है। कितने अरमानों से आप लोगों ने घर बनाए हुए हैं, और हर शख़्स ने बनाए यहाँ तक कि चिड़िया भी घोंसला शौक़ से बनाती है। एक बया एक छोटा सा परिन्दा भी बड़े शौक़ व ज़ौक़ से तिनके जमा करता है और अपने लिए घोंसला बनाता है कि हर जानदार की फ़ितरत है कि वह रहने के लिए कोई न कोई ठिकाना बनाता है। कितने अरमानों से इन्सान घर बनाता है और फिर ख़ामोशी से छोड़कर लोगों के कन्धों पर सवार होकर अंधेरी कोठरी में जाकर सो जाता है।

ख़ूबसूरत चेहरा! कीड़ों की ग़िज़ा

स्पेन से कम्बल मंगवाए सोने के लिए, दस बरस भी न सोने पाए थे कि हमेशा के लिए मिट्टी की चादर ओढ़कर सो गए, बड़े सारे डिज़ाईन देखकर पलंग बनवाए बैड बनवाए और जब उठे तो एक पल में उठकर चले गए और जाकर मिट्टी के बिस्तर पर हमेशा के लिए जाकर सो गए, अपनी ख़्वाबगाह में बड़े डिज़ाईन की लाईटें लगवायीं, बड़े ख़ूबसूरत क़ुमक़मों में बल्ब लगाए और कुछ दिन भी नहीं रहने पाए थे कि उठकर अंधेरी कोठरी में जाकर सो गए। हर वक़्त अपने घर को चमकाने वाले जाकर वहशत और तन्हाई के घर में और कीड़ों के साथ जाकर सो जाते हैं, बदन पर कोई च्युंटी आ जाए तो आदमी उसको झाड़ देता है, मार देता है, आज उसके बदन पर करोड़ों कीड़े फिर रहे हैं, जिस चेहरे को गर्मी से बचाता है, सर्दी से बचाता है, भूख से बचाता है, थकन से बचाता है उसी चेहरे पर आज कीड़ों का हमला है कोई इसकी आँख खा रहा है, कोई इसकी खाल खा रहा है, कोई इसकी ज़बान नोच रहा है, कोई इसकी टाँगों को लगा हुआ है और वह पेट जिसके भरने के लिए सारी ज़िन्दगी धक्के खाता रहा, वही पेट क़ब्र में सबसे पहले फट जाता है और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दे! दुनिया को लालच की नज़र से मत देखा कर, क़ब्र में सबसे पहले तेरे वजूद को जो कीड़ा खाता है वह तेरी आँखें यही होती हैं, सबसे पहले यही शमा बुझती है और सबसे पहले इसी को अल्लाह निकालता है और कीड़ों को खिला देता है।

तो जिस इन्सान का यह हैरतनाक अन्जाम हो कि मौत उसकी शिकारी हो, आफ़तों के फ़ंदे उसके चारों तरफ़ क़ायम किए जा चुके हों, मुसीबतों की खाईयाँ क़दम क़दम पर उसके लिए खोदी गई हों, ग़मों के बादल कभी उसके उफ़क से अटते ही न हों, ख़ुशियों की किरन बिजली की चमक की तरह आकर गुज़र जाती हो, परेशानियों और फ़िकरों के समुंद्रों में डूबा हुआ हो, और बीमारियाँ उसके साथ अपना रोल अदा कर रही हों, दोस्तों की बेवफ़ाईयाँ और औलाद की नाफ़रमानियाँ उसके दिल पर नश्तर चला रही हों, क़ब्र उसको रोज़ाना पुकार रही हो,

﴿انا بيت وحشة، انا بيت الدور، انا بيت الظلمة﴾

मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं अंधेरों का घर हूँ, कीड़े मकोड़ों का घर हूँ, मेरे पास आना है तो कोई सामाने सफ़र लेकर आना, आप ज़रा ज़िन्दगी की गहराई में देखें कि यह कितनी बेपाएदार, बेसबात, बेवफ़ा, बे क़रार ज़िन्दगी है कि जहाँ एक पल इन्सान को क़रार नहीं, कहीं एक पल इन्सान को ठहराव नहीं, थोड़ी सी ख़ुशियाँ देखता है और फिर चारों तरफ़ ग़मों के बादल एक ख़ुशी को लेने के लिए लाखों पापड़ बेलने पड़ते हैं और वह ख़ुशी आती है और चली जाती है, भला यह भी ज़िन्दगी है।

सबसे ज़्यादा डराने वाली क़ुरआनी आयत

मैंने एक आयत आपके सामने पढ़ी ख़ुत्बे में जिसके बारे में उलमा फ़रमाते हैं यह क़ुरआन पाक की सबसे ख़ौफ़नाक आयत है—

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे ख़ौफ़नाक आयत,

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे ज़्यादा डराने वाली आयत,

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे लरज़ा देने वाली आयत,

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे ज़्यादा हैबत तारी कर देने वाली आयत,

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे ज़्यादा फड़फड़ा देने वाली आयत और लरज़ा देने वाली आयत और डरा देने वाली आयत और हैबत तारी कर देने वाली आयत और पैरों तले से ज़मीन निकाल देने वाली आयत है। कौन सी?

﴿فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره.﴾

ग़ाफ़िल संभल कर चल, देखने वाला तुझ से ग़ाफ़िल नहीं, उसने पुकार पुकार कर ऐलान किया है। एक राई के दाने के बराबर भी तूने गुनाह किया तो याद रख सज़ा के लिए तैयार हो जा और एक राई के दाने के बराबर भी तूने नेकी की तो उसके बदले के लिए तैयार हो जा। तेरा रब ज़ालिम नहीं है।

﴿ان تك مثقال حبة من خردل﴾

एक राई के दाने के बराबर नेकी कर ली, बुराई कर ली, कहाँ?

﴿فتكن فى صخرة﴾ किसी पहाड़ की ग़ार में, ﴿او فى السموات﴾ कहाँ? आसमान की वुसअतों में गुम होकर, ﴿اوفى الارض﴾ कहाँ? ज़मीन की ग़ारों में, अंधेरों में छिपकर। क्या होगा? ﴿يات بها الله﴾ एक दिन आएगा अल्लाह तुझे सामने करके दिखा देगा।

हबीब रह० का ख़ूबसूरत लड़की की तरफ़ न देखना

हबीब बिन उमैर ताबई हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के शागिर्द बड़े ख़ूबसूरत क़ैद हो गए। कुल दस आदमी थे तो उन्होंने नौ क़त्ल कर दिए, इनको पकड़ लिया। रोमन सरदार ने कहा ग़ुलाम बनाऊँगा। क़ैद में लेकर कहने लगा अगर तू इसाई हो जाए तो अपनी बेटी तुझे दे दूँगा। तुझे अपनी रियासत में से हिस्सा भी दूँगा। उन्होंने फ़रमाया तू सारा जहान भी दे दे तो यह नहीं हो सकता।

कुफ़्र तो बेहया होता ही है। हया तो सरासर इस्लाम में है। उसने अपनी बेटी से कहा इससे बदकारी करो। जब यह इस रुख़ पर आएगा तो इस्लाम भी छोड़ जाएगा। रोम की लड़की थी, इधर रोम का हुस्न उधर अरब की जवानी। आग भी तेज़ है और क़ुव्वत भी जवान है और दो हैं तीसरा है कोई नहीं।

अब यहाँ सारी रुकावटें ख़त्म हैं और वह औरत दावत दे रही है और यह नौजवान अपनी नज़र झुकाने की लज़्ज़त में झुके हुए हैं, इसे पाकदामनी की लज़्ज़त का पता है लिहाज़ा उसकी नज़र उठने का नाम नहीं लेती। उसने सारे जतन कर मारे, अपने हुस्न का हर तीर आज़माया, अपने मकर का हर जाल फेंका लेकिन पाकदामनी की तलवार ने हर हर जाल के हर हर तार को तार तार कर दिया और हर तीर को बेकार कर दिया।

आख़िर तीन दिन के बाद उसने हथियार डाल दिए, कहने

लगी, ﴿ما اذا يمنعك منى﴾ अल्लाह के बन्दे यह तो बता तुझे रोकता कौन है? आज तीसरा दिन है तूने मुझे नज़र उठाकर नहीं देखा, रोकने वाला कौन है?

उसने कहा मुझे रोकने वाला वह है

﴿لا تاخذه سنة ولا نوم﴾ जो न सोता है न ऊँघता है, जो मुझसे ग़ाफ़िल नहीं, मैं उससे ग़ाफ़िल हूँ, वह मेरा रब है जो अर्श पर बैठा मुझे देख रहा है कि मेरी मुहब्बत ग़ालिब आती है या शहवत ग़ालिब आती है, मुझे आगे करता है या शैतान को आगे करता है। ऐ लड़की मुझे मेरे रब से हया आती है। इसलिए मैंने अपनी ताक़त को रोक रखा है। वह बाहर निकलकर अपने बाप से कहने लगी–

﴿الى اين ارسلتنى الى حديد او حجر لا يكل لا ينسر﴾

आपने मुझे किस पत्थर के पास भेजा किस लोहे के पास भेजा है जो न देखता है न खाता है मैं कहाँ से गुमराह करूँ?

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु की अमानतदारी

जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने घोड़ा ख़रीदा। नौकर से कहा ख़रीदकर लाओ। वह ले आया। तीन सौ रुपए में सौदा हुआ। जब घोड़ा देखा तो वह घोड़ा मंहगा था। मालिक को ख़ुद पता नहीं था अपनी चीज़ की क़ीमत का तो वह मालिक से कहने लगे तेरे घोड़े के चार सौ तुझे दे दूँ? कहने लगा जी अच्छा अच्छी बात है।

कहा अगर पाँच सौ कर दूँ,

कहा यह इससे भी अच्छी बात है।

कहा छः सौ कर दूँ?

कहा यह इस इससे भी अच्छी बात है।

कहा सात सौ कर दूँ?

अब जो बेचने वाला था वह चक्कर में पड़ गया कि यह क्या हो रहा है? कभी ख़रीदार ने भी क़ीमत बढ़ाई? ये जो दुकानदार बैठे हैं ये क्या करते हैं, क़ीमत बढ़ाते हैं और जो लेने वाला होता है वह क्या करता है वह क़ीमत घटाता है, घटाओ, वह कहता है, नहीं। वह कहता है क़ीमत घटाओ, दुकानदार कहता है नहीं।

यहाँ उल्टा हो रहा है। ख़रीदार रक़म बढ़ा रहा है, बेचने वाला हैरान होकर सुन रहा है।

फिर कहने लगे आठ सौ कर दूँ?

वह कहने लगा मैं तो तीन सौ पर भी राज़ी था।

कहने लगे आठ सौ दे दो और घोड़ा ले लो।

जब वह चला गया तो नौकर, ग़ुलाम ने कहा यह क्या किया? मैं तो तीन सौ में सौदा पक्का करके लाया था। ये पाँच सौ किस ख़ुशी में दे दिए हैं?

इर्शाद फ़रमाया यह घोड़ा आठ सौ का था मैं तीन सौ में रखकर अल्लाह को क्या जवाब देता? जबकि मैंने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ वायदा किया था कि जब तक ज़िन्दा रहूँगा मुसलमान की ख़ैरख़्वाही करूँगा।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ौफ़े ख़ुदा

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारा दुश्मन

अल्लाह का नाफ़रमान है तो तुझे बदला लेने की कोई ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआला ख़ुद अपने नाफ़रमान से बदला चुकाएगा। जो मुजरिम बनकर मर गया तो किस इबरतनाक तरीक़े से क़ब्र उसका हश्र करेगी। सारी दुनिया के इन्सानों को इस आने वाले दिन से बचाना है और अपने आपको भी बचाना है। गर्मी सर्दी से भी बचाना है यह हुक़ूक़ का मामला है लेकिन अपने आपको जहन्नम की आग से बचाने के लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

﴿قوا انفسكم واهليكم نارا وقودها الناس... الخ﴾

जिस आग का ईंधन हम और आप हैं।

इस आयत को सुनने के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु रोते हुए बाहर निकल गए, तीन दिन ग़ाएब रहे और किसी को नहीं मिले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनको तलाश करो, जब तलाशी हुई तो पहाड़ों में बैठे हुए थे। सिर पर मिट्टी पड़ी हुई थी और रो रहे थे कि हाय उस आग की हालत क्या होगी जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर हैं उनको पकड़कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाया गया तो फ़रमाया कि इस आयत ने मुझे बेक़रार कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आप उनमें से नहीं हैं, सलमान तू तो वह है जिसको जन्नत ख़ुद चाहती है। जिसको जन्नत चाहे वह जंगलों और पहाड़ों में निकल जाए और जिसको कुछ पता ही नहीं जन्नत और जहन्नम का वह मज़े की नींद सो जाए।

एक सहाबी तहज्जुद की नमाज़ में रो रहे हैं कि ऐ अल्लाह! जहन्नम की आग से बचा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर देखा और फ़रमाया अरे भाई तूने क्या कर दिया तेरे रोने

की वजह से आसमान में सफ़े मातम बिछी हुई है तेरे रोने ने फ़रिश्तों को भी रुला दिया। ऐसा दर्द व ग़म उनके अन्दर उतर गया था।

तेरे रोने ने फ़रिश्तों को भी रुला दिया

मेरे भाईयो! क्या करें कभी तो बैठकर इतना रोना आता है कि हम कहाँ से कहाँ चले गए। एक लड़के की दुआ पर आसमान से फ़रिश्ते उतरते थे। एक नौजवान सहाबी अपने घर में नमाज़ पढ़ रहे थे, दोज़ख़ की आयत पढ़कर चीख़ निकली। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गली में से गुज़र रहे थे। आपने रोने की आवाज़ को सुना। मस्जिद में वह सहाबी जब नमाज़ पढ़ने के लिए आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे अल्लाह के बन्दे! आज तेरे रोने ने आसमान के बेशुमार फ़रिश्तों को रुला दिया। ऐसे जवान थे जिनके रोने पर फ़रिश्ते रोया करते थे।

देखो मेरा बन्दा ऐसा होता है

एक नौजवान ने दोज़ख़ का ज़िक्र सुना और कपड़े उतारे और जाकर रेत पर लेट गया और तड़पने लगा और कहने लगा ऐ नफ़्स! देख दोज़ख़ की आग। यह रेत की आग बर्दाश्त नहीं तो दोज़ख़ की आग कैसे बर्दाश्त करेगा? रात को मुर्दार बनकर सारी रात सोता है और दिन को बेकार फिरता है, तेरा क्या बनेगा? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सारा मंज़र देख रहे थे। फ़रमाया इधर आ तुझे ख़ुशख़बरी सुनाऊँ, तेरे लिए आसमान के

सारे दरवाज़े खोल दिए गए और अल्लाह तआला ख़ुश हो रहा है और फ़रिश्तों से कहता है कि देखो मेरा बन्दा ऐसा होता है।

क़यामत के बारे में क़ुरआन का लहजा

जब क़ुरआन का रुख़ आख़िरत की तरफ़ फिरता है तो एक दम उसका लहजा बदल जाता है। जब दुनिया की तरफ़ आता है तो एक दम लहजा बदल जाता है। जब आख़िरत की तरफ़ होता है तो एकदम लहजा मे हैबत आ जाती है, एक रोब आ जाता है जैसे हम कहते हैं!!! ﴿هل اتك، وما ادراك﴾ यह अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जैसे कोई बम मार रहा हो।

यह हमारी बदक़िस्मती है कि हम ने न क़ुरआन समझा न क़ुरआन की ज़बान समझी। इस क़ौम की इससे बड़ी बदक़िस्मती और क्या होगी जो अपनी किताब जो उनको किनारे लगाने वाली थी न उसको समझा न जाना। हाय अफ़सोस!

﴿فاصدع بما تومر... واعرض عن المشركين، انا كفيناك المستهزئين.﴾

इस आयत के अल्फ़ाज़ में जो गर्मी है। इसको एक बद्दू ने सुना। वह अरब था, अरबी जानता था। जब यह आयत सुनी तो ऊँट पर जा रहा था, ज़मीन पर जा गिरा थर्रा गया। उसने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मख़्लूक़ ऐसा कलाम नहीं कर सकती। हमें तो पता ही नहीं कि क़ुरआन हम से क्या कहता है। कितनी बदक़िस्मती है कि जिस चीज़ को समझना था उसको समझा नहीं।

तालीम के नाम पर जिहालत आम हो गई। रोटी कैसे कमानी है इसको इल्म बना दिया, लोहे को कैसे ढालना है यह इल्म बन गया। अरे भाई इन्सानियत में कैसे ढलना है सबसे बड़ा इल्म है।

जहन्नम की पुकार

﴿هل اتك حديث الغاشية﴾ वह दिन जो तुम पर छा जाएगा उसकी कोई तुम्हें ख़बर है?

﴿وجوه يومئذ خاشعة. عاملة ناصبة﴾ कुछ चेहरे काले होंगे, वीरान होंगे, परेशान होंगे, हैरान होंगे,

﴿تصلى نارا حامية﴾ जो दहकती हुई आग का शिकार हो जाएंगे,

﴿تسقى من عين انية﴾ जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा,

﴿ليس لهم طعام الا من ضريع﴾ जहाँ काँटेदार झाड़ियों के अलावा खाना नहीं होगा,

﴿لا يسمن ولا يغنى من جوع﴾ जो न भूख को दूर करेगा न वह जिस्म के काम आएगा, उस दिन की तुम्हें कोई ख़बर है?

﴿فانذرتكم نارا تلظى﴾ तुम्हें नहीं डर तो मैं डराता हूँ, मेरे बन्दो उस आग से डर जाओ ﴿وقودها الناس والحجارة﴾ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं। जो चीख़ती है और चिंघाड़ती है और अल्लाह की बारगाह में पुकारती है—

﴿اللهم اشتدى حرى وبعد قعرى وعزم جهرى فعجل الى باهلى﴾

ऐ अल्लाह मेरे अंगारे बड़े दहक गए, मेरी गहराईयाँ बड़ी गहरी हो गयीं और मेरी चट्टानें बड़ी सुर्ख़ हो गयीं, या अल्लाह अपने मुजरिमों को मेरे अन्दर डाल दे कि मैं उन्हें जलाऊँ रोज़ाना' यह जहन्नम की पुकार है।

चंगेज़ ख़ान और हलाकू ख़ान का ज़िक्र

6 A चंगेज़ ख़ान ने चालीस शहर ऐसे तबाह कर दिए जिनकी

आबादी तीस लाख से ज़्यादा थी और ऐसे तलवार चलाई जैसे बकरियों पर तलवार चलाई जाती है लेकिन वह अपनी मौत आप मर गया, उसको दुनिया की कोई अदालत सज़ा न दे सकी, उसका पोता मंगू ख़ान अपनी मौत मर गया, हलाकू ख़ान अपनी मौत आप मर गया, उन पर अल्लाह की तलवार नं बरसी और न ही अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसा।

आज के फ़िरऔन हों या मूसा अलैहिस्सलाम का फ़िरऔन हो, अल्लाह उनकी गर्दनों को एक दिन मरोड़ देगा।

﴿ان یوم الفصل کان میقاتا﴾ अल्लाह तआला ने बताया कि मेरे क़ानून को तोड़ने या मेरे क़ानून की पाबन्दी पर जज़ा व सज़ा का पूरा निज़ाम तय है। इसमें कोई कमी नहीं लेकिन इन्तेज़ार करो।

क़यामत की हौलनाकियाँ

﴿ان یوم الفصل کان میقاتا﴾ वह तयशुदा दिन आ गया,

﴿یوم ینفخ فی الصور﴾ एक आवाज़ पड़ेगी,

﴿فتاتون افواجا﴾ तुम फ़ौज-दर-फ़ौज आओगे,

﴿وفتحت السماء﴾ आसमान के दरवाज़े खुलेंगे,

﴿فکانت ابوابا﴾ वह दरवाज़े बन जाएंगे,

﴿وسیرت الجبال فکانت سرابا﴾ पहाड़ फट कर रेत बन जाएंगे,

﴿یوم یجعل الولدان شیبا﴾ जिस दिन बच्चा बूढ़ा हो जाएगा,

﴿وجیئ یومئذ بجھنم﴾ जब जहन्नम लाई जाएगी,

﴿وبرزت الجحیم للغوین﴾ दोज़ख़ को भी नाफ़रमानों के लिए सामने किया जाएगा,

﴿ازلفت الجنة للمتقين﴾ जन्नत भी लाई जाएगी,

﴿ونضع الموازين القسط﴾ एक तराज़ू भी लाया जाएगा,

﴿وان منكم الا واردها﴾ पुलसिरात को भी बिछाया जाएगा,

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا﴾ अल्लाह खुद तशरीफ़ लाएंगे,

﴿وجاء ربك والملك﴾ साथ फ़रिश्ते भी आएंगे,

﴿يوم يقوم الروح والملئكه﴾ आज सब फ़रिश्ते दम साधे खड़े होंगे, आज अल्लाह के सामने कोई बोलने वाला नहीं होगा,

﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ अर्श का साया सिरों पर आ जाएगा, उसे आठ फ़रिश्तों ने उठाया होगा और अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मेरे बन्दों!

﴿انى انصت لكم منذان خلقتكم الى يوم احييتكم﴾

मैंने तुम्हें जिस दिन पैदा किया और जिस दिन तुम्हें मौत देकर उठाया, इस दौरान मैंने तुम्हें कुछ न कहा, बस तुम्हें देखता रहा और तुम्हारी सुनता रहा, मैं तुम्हें देखता रहा कि मेरा बंदा क़ुरआन सुन रहा है कि गाना सुन रहा है, हलाल खा रहा है कि हराम खा रहा है, नमाज़ पढ़ रहा है कि छोड़ रहा है।

अल्लाह की नाफ़रमानी का अंजाम

अब अल्लाह तआला कहेगा तैयार हो जाओ अपने किए को भुगतने के लिए। यह वह वक्त है जब बच्चा भी बूढ़ा हो जाएगा। मरकर मर जाते तो छुट्टी हो जाती, मर मरना नहीं है। यह सब कुछ होने वाला है और जब कोई आदमी नाकाम हो जाएगा और उसकी नेकियों का पलड़ा हल्का हो जाएगा, गुनाहों का पलड़ा

वज़नी हो जाएगा और फ़रिश्ता ऐलान करेगा नाकाम हो गया तो फिर अल्लाह कहेगा ﴿خـــــذوه﴾ पकड़ो, तो फ़रिश्ते भागेंगे और उसको कहाँ से पकड़ेंगे? उसके मुँह में हाथ डालेंगे। उसके नीचे वाला जबड़ा खोलकर और उसके मुँह में हाथ डालकर ठोड़ी के साथ झटका देंगे, नीचे वाला सारा जबड़ा निकलकर बाहर आ जाएगा और उसको नंगे बदन घसीटेंगे। वह कहेगा रहम करो। वह कहेंगे तुम पर रहमान ने रहम नहीं किया हम कहाँ से रहम करें और किसी औरत की नाकामी का फ़ैसला हो गया कि बाज़ी हार गई, उसकी सारी मता लुट गई, पकड़ो उसे तो फ़रिश्ते भागेंगे और उसे सिर की चोटी से पकड़ेंगे और एक झटका देंगे। वह कहेगी रहम करो। वे कहेंगे रहमान ने रहम नहीं किया, हम कहाँ से रहम करें।

यह तो अभी पकड़ हो रही है। अभी आगे घर आ रहा है किस चीज़ का? आग के पर्दे का ﴿نـارا احـاط بهم سرادقها﴾ अभी बिस्तर बिछाएं जाएंगे ﴿لهم من جهنم مهاد﴾ अंगारे जोड़कर मुसहरी बन जाएगी और बिस्तर बिछाया जाएगा ﴿ومن فوقهم غواش﴾ आग की चादरों को गहरा करके उनके बिस्तर बनाकर उसके अन्दर डाल दिया जाएगा।

क्या आप ने जहन्नम से हिफ़ाज़त की तैयारी कर ली?

मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम नबियों की रातों की नींद उड़ती थी, दिन का क़रार उठता था। इसलिए नहीं कि रोटी से परेशान होते हैं इसलिए कि जन्नत व दोज़ख़ को देखते हैं, फिर

इन्सानियत की नाफ़रमानी को देखते हैं फिर वे बेक़रार हो जाते हैं कि उनको कैसे अज़ाब से बचाऊँ?

﴿ان عذابها كان غراما﴾ अज़ाब कोई छोटा मोटा अज़ाब नहीं है। वह भड़कती हुई आग खाल को उतार देने वाली आग है,

﴿فانذرتكم نارا تلظى﴾ अल्लाह कहता है मैं तुम्हें इस आग से डराता हूँ जो भड़कने वाली आग है मैं तुम को उस आग से डराता हूँ,

﴿سيصلى نارا ذات لهب﴾ वह अंगारों वाली, वह भड़कने वाली आग है,

﴿في عمد ممددة﴾ वह बड़े बड़े सुतूनों में भरी हुई आग है,

﴿لهم من جهنم مهاد﴾ उनके सुतून भी आग के हैं,

﴿يسقى من ماء صديد﴾ उनका पानी पीप है, पीने को दिया जाएगा जो ज़ख़्मों से पीप निकलेगी उसको जमा करके गर्म किया जाएगा फिर वह पीने को दिया जाएगा। फ़रिश्ते कहेंगे पियो।

जहन्नम का खौलता पानी

﴿يتجرعه ولا يكاد يسيغه﴾ पीना चाहेगा पी नहीं सकेगा, ﴿ويأتيه الموت من كل مكان﴾ चारों तरफ़ से मौत आती दिखाई देगी ﴿وما هو بميت﴾ लेकिन वह मरेगा नहीं, मौत को पुकारेगा, मौत आएगी नहीं। पीने को पानी है तो ऐसा ज़बरदस्त कि जिन प्यालों में वह पानी है। मुँह के क़रीब लाएगा तो प्याले की तपिश और पानी की तपिश से होंट सूजकर नीचे वाला होंट लटक के पाँव तक चला जाएगा और ऊपर वाला होंट सूजकर सिर के ऊपर चला जाएगा न पी सकेगा न उगल सकेगा न निगल सकेगा और फिर फ़रिश्ते

मारेंगे, पियो पियो। पिएगा तो आँते कट जाएंगी, पाख़ाने के रास्ते बाहर निकलेंगी, फ़रिश्ते फिर सारी आँतों को उठाकर उसके मुँह में ठूँसकर उसके नीचे भरकर फ़िट कर देंगे। उसकी खाल बयालिस हाथ मोटी होगी और उसके सिर के ऊपर जब पानी डालेंगे, ﴿ذق انك انت العزيز الكريم﴾ कि तफ़सीर में लिखा हुआ है कि फ़रिश्ते पकड़ेंगे काफ़िर को और उसके सिर के ऊपर रखेंगे कील और फिर मारेंगे हथौड़ा उसकी खोपड़ी पर और खोपड़ी फट जाएगी और उसके ऊपर डालेंगे पानी, अन्दर जाएगा तो आँतो को काट के बाहर फेंक देगा और उस पर गिरेगा तो बयालिस हाथ मोटी खाल उधड़कर ज़मीन पर गिर जाएगी। अल्लाह तआला कहेंगे ﴿ذق انك انت العزيز الكريم﴾ चखो इसको तू दुनिया में बड़ा मुतकब्बिर था।

अब किसी आदमी को सारा जहान मिल गया और मरने के बाद दोज़ख़ में चला गया तो क्या देखा उसने?

चखो दोज़ख़ का अज़ाब! बड़े मज़े किए थे दुनिया में

हज़रत सिद्दीक़ अकबर का इर्शाद है ﴿لا خير في خيرتاتهم النار﴾ वह भलाई कोई भलाई नहीं जिसको दोज़ख़ मिल जाए। जब देखेंगे अज़ाब का घेरा डाल दिया तो फिर कहेंगे मालिक (फ़रिश्ता दारोग़ा) से या मालिक! अपने रब से कह दो हमें मौत दे दें, वह कहेंगे ﴿انكم ماكثون﴾ मौत नहीं आ सकती, अब तो यहीं रहना पड़ेगा, कहेंगे अच्छा ﴿يخفف عنا يوما من العذاب﴾ ऐ फ़रिश्तो! अपने रब से कहो कि थोड़ा अज़ाब कम कर दे तो जवाब आएगा,

﴿اولم تاتيكم رسلكم بالبينت﴾ तुम्हें किसी बताने वाले ने नहीं बताया था कि क्या होने वाला है, कहेगा बताया तो था फिर तुम ने क्या किया था?

﴿ما نزل الله من شيء ان انتم الا في ضلال كبير﴾

हम ने कहा सब झूठ है कोई नहीं जो होगा देखा जाएगा। उन्होंने कहा अब चखो ﴿فلن نزيدكم الا عذابا﴾ कि अज़ाब बढ़ता जाएगा।

﴿ان جهنم كانت مرصادا﴾ जहन्नम जहन्नमी का इन्तेज़ार कर रही है ﴿للطغين﴾ सरकशों के लिए ﴿مابا﴾ वह ठिकाना है ﴿لبثين فيها احقابا﴾ इसमें रहना हमेशा है ﴿لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا﴾ न पानी न ठंडक, ﴿الا حميما و غساقا﴾ खौलता पानी, काँटेदार झाड़ियाँ ﴿جزاء وفاقا﴾ पूरा पूरा बदला ﴿انهم كانوا لا يرجون حسابا﴾ यह हिसाब का यक़ीन नहीं रखते थे ﴿وكذبوا بايتنا كذابا﴾ उन्होंने मेरी निशानियों को झुठलाया ﴿وكل شيء احصينه كتابا﴾ मैंने एक एक चीज़ को लिखा है ﴿فذوقوا﴾ आज चखो, ﴿فلن نزيدكم الا عذابا﴾ तुम्हारा अज़ाब बढ़ता जाएगा बढ़ता जाएगा।

जहन्नम उन मुसलमानों के लिए है जो बग़ैर तौबा किए मर गए, बड़े गुनाह करते हुए तौबा किए बग़ैर मर गए। जहन्नम उनके लिए है, नसारा के लिए है, यहूदियों के लिए है, सईर मजूसियों के लिए है, सक़र सितारों के पुजारियों के लिए है। जहीम मुश्रिकीन के लिए हाविया। मुनाफ़िक़ीन के लिए है और हर नीचे वाला दर्जा ऊपर वाले दर्जे से ज़्यादा शदीद है। ज़्यादा सख़्त है, ज़्यादा ख़ौफ़नाक है, ज़्याद हैबतनाक है। जहन्नम में से किसी आदमी को निकालकर एक लाख इन्सानों के बीच बिठा दिया

जाए तो और वह साँस ले तो उसकी साँस की गर्मी से एक लाख आदमी जलकर ख़त्म हो जाएंगे।

दोज़ख़ की आग का बिस्तर

﴿فینبئ بہ الی النار﴾ जहन्नम के दहकते हुए अंगारे उसकी सीट बन जाएंगे, ﴿لھم من جھنم مھاد﴾ दोज़ख़ का बिस्तर दोज़ख़ की चारपाई, ﴿ومن فوقھم غواش﴾ दोज़ख़ का बिस्तर आग के कमरे आग के बिस्तर,

﴿حمیم وحمیم﴾ खौलते हुए पानी,

﴿لا یسمن ولا یغنی من جوع﴾ काँटेदार खाना जो न चैन हो न आराम हो।

जहन्नम का खौलता पहाड़

﴿سارھقہ صعودا﴾ फ़रिश्ते गर्दन में तौक़ डालकर एक पहाड़ है उस पर चढ़ने को कहेंगे। वह पहाड़ इतना गर्म है कि उस पर पाँव रखेगा तो पाँव पिघल जाएगा फिर पाँव हटा लेगा फिर हाथ रखेगा तो हाथ सारा पिघल जाएगा फिर हाथ खींच लेगा। फिर कहेंगे चढ़ो। कहेगा चढ़ा नहीं जाता फिर उसकी गर्दन में तौक़ डालेंगे और घसीटेंगे और वह घिसटता हुआ जा रहा होगा और उसका पूरा जिस्म पिघल जाएगा। बनेगा फिर पिघलेगा, बनेगा फिर पिघलेगा जैसा लोहा पिघलता है आग की तपिश से फिर उसको साँचे में ढालेंगे तो वह फिर पिघलेगा फिर बनेगा। सत्तर साल तक पहाड़ की चढ़ाई है उसके ऊपर ले जाकर यूँ छोड़ देंगे। मर्द हो या

औरत। यह इसी तरह पिघलता हुआ बनता हुआ दोबारा नीचे आकर गिरेगा।

जहन्नम के साँप और बिच्छू

और आगे जहन्नम के साँप हैं जो एक दम उस पर टूट पड़ेंगे। एक एक बिच्छू का एक डंक एक साँप का एक बार डसना चालीस चालीस साल तक उसको तड़पाता रहेगा और कोई उसको छुड़ाने वाला नहीं होगा,

﴿يوم يتذكر الانسان ما سعى وبرزت الجحيم لمن يرى.﴾

और आज जहन्नम खिंची चली आ रही है, चीखती आ रही है, चिंघाड़ती आ रही है, शोर मचाती आ रही है, ﴿تفور﴾ फट रही है, ﴿تفور﴾ जोश मार रही है, ﴿تكاد تميز من الغيظ﴾ गुस्से से फट रही है।

दोज़ख़ का कढ़वा पानी

एक क़तरा दोज़ख़ के पानी का ज़मीन में डाल दें तो सारा जहान कढ़वा हो जाएगा, एक लोटा पानी समुंद्र में डाल दें तो सारे समुंद्रों का पानी उबलने लग जाएगा। दोज़ख़ का एक पत्थर दुनिया के पहाड़ों पर रख दें तो सारे पहाड़ पिघलकर स्याह पानी में बदल जाएंगे।

एक ज़ंजीर का कड़ा (जो ज़ंजीर उनकी गर्दन में लपेटी जाएगी, उनके जिस्म से लपेटी जाएगी) उसका एक कड़ा निकालकर हिमालय पहाड़ पर रख दिया जाए तो उसके टुकड़े-टुकड़े करता

हुआ सातों ज़मीनों को चीरता हुआ नीचे चला जाएगा। इतना वज़नी एक कड़ा होगा। सारी ज़ंजीर कितनी वज़नी होगी और कैसे तप रही होगी।

जहन्नम की वह आग है जिसमें से अगर जहन्नमियों को निकालकर दुनिया की आग में लिटा दिया जाए तो वह ऐसा सोएगा कि कई सौ साल करवट भी नहीं बदलेगा, ऐसी गहरी नींद दुनिया की आग में सोएगा।

﴿انها لظى﴾ भड़कती, ﴿نزاعة للشوا﴾ खाल को खींचती, ﴿تدعوا من ادبر وتولى﴾ नाफ़रमानों को पुकारती, पकड़ती, जकड़ती, अज़ाब बढ़ाती हुई यह मुजरीमों की तरफ़ बढ़ती हुई चली जाएगी और इधर से जन्नत लाई जाएगी।

आँसूओं की बरकत

तो मेरे भाईयो! यह बात नबियों को रुलाती है, यह बात हमें भी रुलाए कि या अल्लाह! हमने तेरे बन्दों को दोज़ख़ से बचाना है। हमारा रोना है कारोबार का, बीवी बच्चों का, सेहत का, बीमारी का, मुक़दमे का। हम एक रोना और सीख लें। हमारा रोना क्या रोना हो? ख़त्मे नबुव्वत का रोना, नबियों वाला रोना, क्या हो? या अल्लाह तेरे बन्दे दोज़ख़ में जा रहे हैं, मैं इनको कैसे दोज़ख़ से बचाऊँ? अल्लाह की क़सम ये आँसू आपके कितने लम्बे बड़े मुजाहिदों पर यह आँसू का एक क़तरा भारी हो जाएगा।

अल्लाह से तौबा कर लें

तो भाई! हम अल्लाह की मानें। आज तक जो हुआ उससे

तौबा कर लें। अल्लाह की ज़ात जैसा रहीम और करीम और उस जैसा मेहरबान और माफ़ करने वाला ख़ुश्की और तरी में कोई नहीं। सारी ज़िंदगी गुनाहों में गुज़र जाए सिर्फ़ एक बार कह दे या अल्लाह माफ़ कर दे। अल्लाह तआला सारे ही गुनाह माफ़ कर देते हैं, ताना भी नहीं देता। आपकी और हमारी माँ ख़ुदा न ख़्वास्ता नाराज़ हो जाए, उसे राज़ी करना पड़े, पहले ताने बोलियाँ देगी फिर माफ़ करेगी और अल्लाह तआला सुब्हानअल्लाह या अल्लाह मुझे माफ़ कर दे, ग़लती हो गई। चल मेरे बन्दे सारे ही गुनाह माफ़ तो भाई माफ़ी मांग लें अल्लाह तआला से सुलह हो जाएगी। वहीं सारा मस्अला हल हो जाएगा।

ज़मीन व आसमान तो जोश खाते हैं कि ऐ अल्लाह इजाज़त हो तो तेरे नाफ़रमानों को निगल जाएं और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मुझ से बड़ा कोइ सख़ी हो सकता है? मैं तो अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूँ।

आज सच्चे दिल से तौबा कर लें कि आज के बाद हम अल्लाह को मनाएंगे, अल्लाह तआला की मानेंगे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

O O O

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शाने मुबारका

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلي ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعني وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبي صلى الله عليه وسلم يا ايها
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह जल्ले जलालुहू ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सारी काएनात की कामयाबी और इज़्ज़तें देकर भेजा और यह तय कर दिया—

﴿وجعل الذلة والصغار على من خالف امرى﴾

जो मेरे नबी के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसके लिए ज़िल्लत मुक़द्दर कर दी गई। सारी दुनिया और आख़िरत की कामयाबियाँ

लेकर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाए। अब सारे इन्सानों के लिए कामयाबी का एक ही रास्ता है बाक़ी सारे रास्ते बंद।

﴿يا محمد لو استفتحوني كل باب وجاء وني من كل طريق.﴾

"ऐ हमारे नबी! हमने सारे रास्ते और दरवाज़े बन्द कर दिए। एक रास्ता खुला है।"

एक दरवाज़ा खुला रखा है जो लोग मेरे तक आना चाहते हैं, मेरे तक आने का कोई रास्ता नहीं है सिवाए आपकी इत्तिबा के जो आपके तरीक़े पर चलकर आएगा मेरे तक पहुँचेगा और जो आपके तरीक़े से हट जाएगा वह ज़लील व ख़्वार होगा।

﴿لو كان موسى حيا لما وسعه الا تباعي.﴾

अगर आज मूसा अलैहिस्सलाम भी ज़िन्दा हों तो मेरे तरीक़े पर चले बग़ैर उनको कोई चारा नहीं।

कामयाबी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों में है

मेरे भाईयो! एक ही रास्ता बाक़ी है। दुनिया और आख़िरत के ख़ज़ानों का। कुफ़्फ़ार इससे टकराए कि उसकी मानेंगे तो हमारी हुकूमतें चली जाएंगी। इसके पीछे चलेंगे तो हमारी इज़्ज़तें चली जाएंगी और हमारा माल चला जाएगा, हमारा मुल्क चला जाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

يا معشر قريش كلمة واحدة لو تعطونها دانت
لكم العرب فتؤادى لكم الجزية

ऐ क़ुरैश की जमाअत। मैं तुम्हारी हुकूमतें लेने नहीं आया, मेरी मानोगे तो तुम्हारी हुकूमतें भी बढ़ जाएंगी और तुम्हारा माल भी बढ़ जाएगा।

किसरा के बाग़ व बहार, क़ालीन एक एकड़ चौड़ा (2201 फिट लम्बा और 190 गज़ चौड़ा) आज का एकड़ उस वक़्त का पता नहीं एकड़ कितना था लेकिन आज का एकड़ 2201 फिट लम्बा और 190 गज़ चौड़ा इतना लम्बा क़ालीन, 30 खरब दीनार सोने के सिक्के और 100 ख़ज़ाने अलग छिपे हुए और उसका तख़्त 270 हाथ लम्बा 210 हाथ चौड़ा था जिस पर 53 मन 30 सेर सोना लगा हुआ था, 1232 मन उस पर चाँदी लगी हुई थी। यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में अल्लाह तआला ने मदीने पहुँचा दिया।

﴿نصر من الله وفتح قريب وبشر المومنين﴾

डेढ़ डेढ़ हज़ार दिरहम का जोड़ा एक एक बदरी सहाबी को वह सहाबा जिन्होंने जंगे बदर में शिरकत की थी।

मुहब्बत का अनोखा अन्दाज़

अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी को अपने सिफ़ाती नाम नहीं अता फ़रमाए, अल्लाह तआला के अपने नाम हैं कोई उसके नामों में शरीक नहीं। उसकी सिफ़ात में कोई शरीक नहीं। अपनी ज़ात के बारे में फ़रमाया ﴿ان ربكم لرؤف رحيم﴾ और अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया ﴿بالمؤمنين رؤف رحيم﴾ मेरा नबी भी रऊफ़ और रहीम है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रऊफ़ और रहीम होना अपनी ज़ात

के एतबार से है और अल्लाह तआला का रऊफ़ और रहीम होना अपनी ज़ात के एतबार से है। अल्लाह तआला ने अपने नाम में मुशाबिहत पैदा फ़रमाई है कि मेरा नबी किस पर रऊफ़ और रहीम है अपनी उम्मत पर रऊफ़ और रहीम है।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में हर नबी को नाम लेकर पुकारा लेकिन अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब भी पुकारा है तो नाम नहीं लिया,

﴿يا ايها الرسول، يا ايها النبي، ياايها المزمل، ياايها المدثر.﴾

एक जगह भी नाम नहीं लिया और चार जगह नाम लिया है और यह ख़िताब नहीं किया सिर्फ़ नाम बताया है कि मेरे हबीब के नाम हैं और यह नाम न अब्दुलमुत्तलिब ने रखा न आमना ने रखा है। यह नाम मैंने रखा है। हज़ारों साल पहले आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश से भी पहले अल्लाह तआला ने क़ुरआन पढ़ा। उस वक़्त भी नामे "मुहम्मद" क़ुरआन में मौजूद था।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में किसी नबी की क़सम नहीं उठाई सिवाए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ﴿لعمرك﴾ ऐ नबी तेरी जान की क़सम, ﴿انهم لفي سكرتهم يعمهون﴾ यह अल्लाह तआला ने अपने हबीब की क़सम खाई, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर की क़सम खाई और किसी नबी के शहर की क़सम नहीं खाई ﴿وهذا البلد الامين، لا اقسم بهذا البلد﴾ फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की क़सम खाई। किसी नबी की रिसालत पर क़सम नहीं खाई।

﴿يٰسٓ القران الحكيم. انك لمن المرسلين.﴾

क़सम है क़ुरआन-ए-हकीम की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मेरे रसूल हैं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देते हुए क़सम उठाई। छः महीने "वही" नहीं आई। क़ुरैश-ए-मक्का कहने लगे इसके रब ने इसे छोड़ दिया है, इसका रब इससे नाराज़ है तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन क़ुरआन उतारा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ क़ुरआन की ज़बान से

والضحى والليل اذا سجى ما ودعك ربك وما قلى وللاخرة
خير لك من الاولى ولسوف يعطيك ربك فترضى.

पहला तर्जुमाः इस रौशन दिन की क़सम, इस अंधेरी रात की क़सम, न मैं तुझ पर नाराज़ हूँ न मैंने तुझे छोड़ा, आख़िरत तेरे लिए दुनिया से बेहतर है, मैं तुझे इतना दूँगा कि तू राज़ी हो जाए।

इसका दूसरा तर्जुमा जो इमाम राज़ी रह० बयान फ़रमा रहे हैं:

तेरे रौशन चेहरे की क़सम, तेरी बिखरी हुई स्याह ज़ुल्फ़ों की क़सम, ﴿ما ودعك ربك وما قلى﴾ भला मैं तुझे छोड़ सकता हूँ? भला मैं तुम से नाराज़ हो सकता हूँ, दुनिया भी तेरी और आख़िरत भी तेरी और आख़िरत तेरे लिए दुनिया से बेहतर है, तुझे वह दूँगा कि तू रोज़ी हो जाएगा।

देखो भाईयो! सारे जहाँ को कहा कि मुझे राज़ी करो और अपने नबी से कहा तू राज़ी हो जा। अल्लाह के नबी की ज़िन्दगी को ले लो उस तरह जैसे अल्लाह कहता है ऐसे नहीं जैसे मिरासी करते हैं ईमानी हमियत व ग़ैरत हो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बुज़ुर्गी पर अल्लाह का क़सम खाना

﴿والنجم اذا هوى﴾ क़सम है मुझे सितारे की जब वह अपने मदार पर चलता है, जब वह टूटता है कि मेरा नबी गुमराह नहीं है, मेरा नबी अपने रास्ते से हटा नहीं है बल्कि सही रास्ते पर है, सीधी राह पर है। अल्लाह तआला ने किसी नबी के अख़्लाक़ की क़सम नहीं खाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ और आदात की क़सम खाई। क्या फ़रमाया ﴿ن. والقلم وما يسطرون﴾ क़सम है क़लम की और क़लम के लिखे हुए की।

ما انت بنعمت ربك بمجنون . وان لك لا جرا
غير ممنون وانك لعلى خلق عظيم.

आप बड़े ऊँचे अख़्लाक़ वाले हैं। यह तो क़ुरआन अल्लाह के नबी की सीरत बयान कर रहा है।

मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से तौरात लेने के लिए गए। जल्दी-जल्दी आए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जल्दी क्यों आए हो तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ﴿عجلت اليك رب لترضى﴾ या अल्लाह जल्दी आया हूँ ताकि आप राज़ी हो जाएं ﴿لترضى﴾ आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को इर्शाद फ़रमाया ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ ऐ मेरे हबीब मैं आपको इतना दूँगा कि आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस्सलाम को हुकूमत दी तो इर्शाद फ़रमाया ﴿لا تتبع الهوى﴾ ऐ दाऊद! ख़्वाहिश का ग़ुलाम न बनना, दाऊद अलैहिस्सलाम को नसीहत फ़रमाई,

बाहर की ग़ुलामी न करना और अल्लाह तआला ने अपने हबीब की सफ़ाई पेश की,

﴿وما ينطق عن الهوى﴾ मेरा हबीब ख़्वाहिश की ग़ुलामी में बोलता ही नहीं।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ ﴿واجعلني من ورثة النعيم﴾ या अल्लाह जन्नत दे दे। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को फ़रमाया,

﴿انا اعطينك الكوثر﴾ हमने आपको कौसर अता कर दी।

﴿ليطهرك تطهيرا﴾ ऐ मेरे हबीब मैं आपको और आपके घर को पाक करना चाहता हूँ।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की ﴿حسبي الله ونعم الوكيل﴾ अल्लाह मुझे काफ़ी हो जा। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को बिना मांगे फ़रमाया,

﴿يايها النبي حسبك الله﴾ ऐ मेरे नबी तेरा अल्लाह तुझे काफ़ी है।

अल्लाह की बारगाह में आपने अर्ज़ किया या अल्लाह!

اتخذت ابراهيم خليلا وموسى كليما وعلمت لداؤدا لحديد و
سخرت لسليمان رياحا واحييت لعيسى الموت فماذا جعلت لي.

या अल्लाह! इब्राहीम अलैहिस्सलाम! आपके ख़लील, मूसा अलैहिस्सलाम आपके कलीम, दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए लोहा ताबे, सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए हवा ताबे, ईसा अलैहिस्सलाम के लिए मुर्दा ज़िन्दा करने की ताक़त, मेरे लिए क्या है?

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿قد اتيت افضل من كل ذلك﴾ ऐ मेरे हबीब मैंने आपको सबसे आला चीज़ अता फ़रमाई।

वह क्या है? क़यामत तक आपका और मेरा नाम इकठ्ठा

चलेगा, जुदा नहीं हो सकता, एक जगह रहेगा, "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" अब यह बदल नहीं सकता, इकठ्ठा रहेगा।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी ﴿وجعل لی لسان صدق فی الاخرین﴾ या अल्लाह मेरा मक़ाम ऊँचा कर दे। अल्लाह तआला ने क़बूल कर ली, हर नमाज़ में दरूदे इब्राहीमी पढ़वा दिया मगर हमारे नबी को मांगने से पहले ही अल्लाह तआला ने कह दिया, ﴿ورفعنا لك ذكرك﴾ मैंने तेरा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।

मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी ﴿رب شرح لی صدری﴾ ऐ अल्लाह! मेरा सीना खोल दे। अल्लाह तआला ने खोल दिया लेकिन अपने हबीब को हाथ उठाने से पहले कहा, ﴿الم نشرح لك صدرك﴾ मेरे हबीब मैंने तेरा सीना खोल दिया।

मैं सिर्फ़ क़ुरआन में से अल्लाह के नबी की बात बता रहा हूँ। बातों से बात निकल आती है। यह आजकल के नात पढ़ने वाले भी नात पढ़ते हैं मगर गानों के तरज़ पर हाँलाकि नात पढ़ना तो मुबारक अमल है पर यह कैसा ज़ुल्म व सितम है कि गानों के तर्ज़ पर नातें पढ़ी जाएं।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए तो सारी दुनिया के बुत ज़मीन पर जा गिरे। बादशाहों के तख़्त उल्टे हो गए। जो बादशाह उस वक़्त दरबार सजाए बैठे थे और उनके सिरों पर ताज थे वे उछलकर ज़मीन पर जा गिरे।

आग की पूजा की शुरूआत

किसरा के महल में एक हज़ार साल से आग जल रही थी

जिसकी पूजा की जाती थी। ज़हाक के ज़माने से पूजा शुरू हुई आग की।

ज़हाक एक मर्तबा शिकार को निकला। एक साँप हमलावर हुआ। उसने उसे पत्थर मारा। पत्थर आगे पत्थर पर पड़ा। उससे शोला निकला, शोले ने साँप को लपेट में ले लिया। उसने कहा यही मेरी नजात का ज़रिया है। यहाँ से आग की पूजा ईरान में दाख़िल हुई।

इसको हज़ार बरस हो चुके थे और एक पल के लिए यह आग बुझने न पाई थी, इसको जलाते रहते थे, जलाते रहते थे, जलाते रहते थे। सागौन, ऊद की लकड़ियों से दारचीनी की लकड़ियों से यह आग जलाई जाती थी। जैसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए आग एकदम बुझ गई। सारा ज़ोर लगाया जलती नहीं थी।

आपकी पैदाईश पर अल्लाह की खुशी

अल्लाह तआला ने रबियुल अव्वल से अगले रबियुल अव्वल तक पूरी दुनिया में हर औरत को बेटा दिया किसी को बेटी नहीं दी। अपने नबी के एज़ाज़ में। एक समुंद्र की मछली ने दूसरे समुंद्र की मछलियों को जाकर मुबारकबाद दी। देखने में यतीम पैदा हो रहा है आलम में तब्दीली इस तरह आ रही है, बुत गिर रहे हैं, आग बुझ रही है, आसमानों पर चिराग़ां, समुंद्रों में ख़ुशियाँ, फ़िज़ाओं में ख़ुशियाँ। ज़ाहिरी असबाब यह हैं।

जब हज़रत आमना ने गोद में लिया तो हैरान होकर देख रही

हैं यह बच्चा कैसा है? यह बच्चा कैसा है? इधर उनके घर की छत फट गई और एक बादल अन्दर आ गया।

﴿فغشيته وغيبته﴾ एक दम बादल फैला और एक लम्हे के लिए हज़रत आमना को महसूस हुआ कि बच्चा गोद में नहीं है, गोद ख़ाली है और उस बादल के अन्दर से आवाज़ आई,

﴿طوفوا به مشارق الارض ومغاربها﴾

इस बच्चे को पूरब व पश्चिम फिरा दो, उत्तर दक्षिण फिरा दो ﴿ليعرفوا باسمه ونعته وصورته﴾ ताकि सारा जहान इसके नाम को सिफ़ात को, ज़ात को पहचान ले।

अल्लामा सयूती रह० ने एक रिवायत में नक़ल किया है कि जिस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए उस दिन से लेकर अगले पूरे एक साल तक अल्लाह तआला ने किसी औरत को बेटी नहीं दी। सबको बेटे अता फ़रमाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़तना के साथ पैदा हुए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़तना नहीं किया गया ﴿ولد مختونا﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़त्ने के साथ पैदा हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाक पैदा हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ग़लाज़त नहीं लगी हुई थी। जैसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए सारा कमरा रौशन हो गया। हज़रत आमना फ़रमाती हैं कि पूरब पश्चिम मेरे सामने खुल गए, शाम के महल देखे, मदाइन के महल देखे, हिरा और यमन के महल्लात को अल्लाह पाक ने दिखाया, सारी काएनात को रौशन कर दिया।

अभी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए, सारी

दुनिया के बुत ज़मीन पर जा गिरे। बादशाहों के तख़्त उलट गए और बुत ज़मीन पर जा गिरे। अपने आप ज़मीन पर गिर गए। क्या हुआ? बुतों का तोड़ने वाला आ गया, बुत शिकन आ गया, तौहीद की दावत देने वाला आ गया, अल्लाह से मिलाने वाला आ गया, ज़ुलमत को मिटाने वाला आ गया, अंधेरों को दूर करने वाला आ गया, सारी काएनात को नजात दिलाने वाला आ गया तो भाई ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो अल्लाह के नबी के तर्ज़ पर गुज़ारो जो अल्लाह का महबूब है।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे आपके बचपन में पता चल गया था कि आप बड़ी शान वाले हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह कैसे? कहा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चारपाई पर लेटे थे जैसे बच्चा यूँ हाथ मारता है, पाँव मारता है, टाँगें चलाता है, हाथ चलाता है और ऊपर चौदहवीं का चाँद था कभी हाथ मारते मारते आपका हाथ ऊपर जाता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ के साथ ही चाँद भी यूँ हो जाता था। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूँ करते थे चाँद यूँ हो जाता था। आपकी हरकत से चाँद हरकत कर रहा था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

﴿كان القمر يناديني ويحاكيني ويمنعني من البكاء﴾

चाँद मुझ से बातें करता था, मेरा दिल लगाता था, मुझे कहानियाँ सुनाता था ﴿يحاكيني﴾ चाँद मुझे कहानियाँ सुनाता था। जिसको आसमान का चाँद उसके पंघोड़े में लोरियाँ दे और कहानियाँ सुनाए वह कितनी ऊँची शान वाला नबी होगा?

तो हम कहते हैं हर मुसलमान इस अज़ीमुश्शान नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आ जाए जिसको अल्लाह तबारक व तआला ने सारी दुनिया की सरदारी अता फ़रमाई।

बुतपरस्ती का ज़वाल (वाक़िआ)

यमन में एक काहिन कभी बाहर नहीं निकलता था। जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए घबराकर बाहर निकला, कहने लगा ऐ अहले यमन! आज से बुतों का ज़माना ख़त्म हो गया, आज से बुतों का ज़माना ख़त्म हो गया। जिस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बड़े बड़े बुतख़ानों के बुतों से आवाज़ आई कि हमारा ज़माना ख़त्म, अब नबी आख़िर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़माना शुरू हो गया, बुतों को तोड़ने वाले का ज़माना आ गया है।

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों बुत टूटे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तवाफ़ कर रहे हैं, तीन सौ साठ बुत खड़े हुए हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ऊँटनी पर तवाफ़ फ़रमा रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ मुबारक में कमान है, आप चलते जा रहे हैं और बुतों को यूँ इशारा करते हैं—

﴿جاء الحق وزهق الباطل ان الباطل كان زهوقا.﴾

और यूँ इशारा फ़रमाते ही बुत टूटकर गिरता है फिर यूँ इशारा करते हैं और बुत टूट के गिरता है।

फिर यूँ इशारा करते हैं और बुत टूटकर गिरता है। तीन सौ साठ बुत जो बैतुल्लाह में रखे थे हाथ के इशारे से हालाँकि उस

वक़्त कमान हाथ में थी लेकिन कमान को लगाया नहीं किसी बुत को, यूँ किया, इशारा करते चले जा रहे थे और बुत टूटते चले जा रहे थे कि बुतों को तोड़ने वाले का ज़माना आ गया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत वजूद में आई तो सारे आलम में ज़लज़ला आ गया, सारे आलम के बुत गिरे, सारे आलम के बादशाह गूंगे हो गए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश पर यहूदी का शोर-व-गुल

एक यहूदी मक्का मुकर्रमा की गलियों में शोर मचाता फिरता है कि आज कोई बच्चा पैदा होने वाला है? उन्होंने कहा फ़लाँ का लड़का पैदा हुआ है। कहा उसका बाप ज़िन्दा है? कहने लगे हाँ। कहा नहीं नहीं, कोई ऐसा बच्चा बताओ जिसका बाप मरा हुआ हो। उन्होंने कहा अब्दुल मुत्तलिब का पोता पैदा हुआ है। उसने कहा मुझे दिखाओ। जब देखा तो चीख़ निकली और कहने लगा ﴿يا ويل لبني اسرائيل﴾ ऐ बनी इसराईल तेरे लिए हलाकत, ﴿قد خرجت النبوة منها﴾ आज बनी इसराईल से नबुव्वत निकल गई ﴿ورحتم بها يا معشر قريش﴾ और ऐ क़ुरैश की जमाअत! तुम नबुव्वत को आज हम से ले गए। एक वक़्त आएगा,

﴿وليسطون بكم سطوة يخرج صوتها في المشرق و المغرب﴾

यह एक दिन टक्कर लेगा जिसकी टक्कर की आवाज़ मशरिक़ व मग़रिब में सुनाई देगी। अभी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हो रहे हैं, अभी काम शुरू नहीं किया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुस्न की कहानी अम्मा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़बानी

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर औरतों ने हाथ पर छुरियाँ चलायीं थीं मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखतीं तो सीने पर छुरियाँ चला बैठतीं।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं चौदहवीं का चाँद चमक रहा था और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुर्ख़ धारीदार चादर पहने हुए मस्जिदे नबवी के सहन में बैठे हुए थे। हम कभी चाँद को देखते, कभी आपके चेहरे को देखते आपके चेहरे का जमाल चौदहवीं रात के चाँद से ज़्यादा रौशन था।

अल्फ़ाज़ ही कोई नहीं लेकिन क्योंकि ताबीर अल्फ़ाज़ से होती है लिहाज़ा अल्फ़ाज़ ही बयान किए जाएं अल्लाह की अज़मत आएगी तो तब अल्लाह की मानकर चलेगा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत आएगी तो तब उसकी सुन्नत पर चलेगा। अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत कोई नहीं कि अल्लाह ने आपको कितना आली मक़ाम बनाया।

राहिब (सन्यासी) की बशारत

अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र दस बरस है और अबू तालिब आपको लेकर तिजारती काफ़िले में जा रहे हैं।

बुहैरा राहिब रास्ते में पड़ता है। उसकी नज़र पड़ी क़ाफ़िले पर कहने लगा क़ाफ़िले का सरदार कौन है? उन्होंने कहा मैं हूँ। कहा कल आप सबकी दावत है। वह कहने लगे कि आपने पहले तो कभी ऐसा काम नहीं किया। कहा यह काम एक अर्से से कर रहा हूँ।

अगले दिन सारे क़ाफ़िले वाले आ गए। पेड़ के नीचे बैठे हुए देखा तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं हैं। बहैरा ने कहा सारे हैं कोई बाक़ी है? कहने लगे एक बच्चा है वह ऊँट चराने गया है। वह कहने लगा उसी की बरकत से तो तुम्हें बुलाया है, वह न होता तो मैं क्या पूछता था? उसको बुलाओ।

अब एक आदमी भागा भागा गया तो उनको बुलाकर लाए। अब बुहैरा की नज़र पढ़ रही है और देख रहा है और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो कोई जगह साए की नहीं, साया ख़त्म हो चुका है, सारे लोग साए के नीचे बैठ चुके हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धूप में बैठ गए। एक शाख़ तेज़ी से आगे बढ़ी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर साया कर दिया। यह दस साल की उम्र में हो रहा है। उस पेड़ को पता है कि यह बच्चा आख़िरी रसूल है। यह पेड़ जानता है कि आख़िरी रसूल हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजिज़ा! सूखा पेड़ खुजूर देने लग गया

आप सर्दी में बाहर निकले। देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु परेशान हाल बाहर फिर रहे हैं। आपने फ़रमाया अली क्या हुआ? कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! भूख लगी

है, बैठा नहीं जा रहा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे भी भूख लगी है मैं भी इसीलिए बाहर निकल आया हूँ बैठा नहीं जा रहा है। आगे गए तो कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम बैठे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या हुआ? क्यों बैठे हो? कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! भूख लगी है बैठा नहीं जा रहा। हमने कहा चलो बाहर आकर बातचीत करते हैं कोई रात तो कटे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त फ़रमाया। (यह ज़माना सर्दियों का है।) अली जाओ इस खजूरे के पेड़ से कहो अल्लाह का रसूल कहता है कि हमें खुजूरें दो। खुजूर तो गर्मी में आती है और यह ज़माना सर्दी का है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़कर गए। आगे उन्होंने यह भी नहीं कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कैसे होगा? जैसे हम किसी दुकानदार से कहें सच बोलो अल्लाह के नबी का फ़रमान है। कहता है फिर दुकान कैसे चलेगी, फिर कारोबार कैसे चलेगा?

वह कहते या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहाँ से फल आएगा, यह तो सर्दी का ज़माना है। वह दौड़े हुए गए कहा ﴿ایها نخلة﴾ ऐ खुजूर! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते हैं ताज़ा खुजूर दो। टप टप टप पत्तों से ताज़ा खुजूरें गिरने लगीं।

आपकी नबुव्वत की गवाही जानवर की ज़बानी

मदीने की बात है। एक बद्दू गुज़रा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा हैं। कहने लगा कौन

है? उन्होंने कहा यह वही हैं जो आसमान की ख़बरें देते हैं। अच्छा यह है वह। आया ﴿انت الذی تقول ما تقول﴾ तू ही नबुव्वत का दावा करने वाला है? आपने कहा हाँ मैं ही हूँ। उसने कहा अगर मेरी क़ौम ने तेरे साथ अहद न किया होता ﴿لقتلتك كر قتلة﴾ मैं तुम्हें बुरे तरीक़े से क़त्ल कर देता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को गुस्सा आया ﴿دعنی اضرب عنقه﴾ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इजाज़त हो तो गर्दन उड़ा दूँ। आप ने कहा उमर सब्र करो, तुम्हें पता है दरगुज़र करना नबुव्वत की शान है। हम तो दरगुज़र तो छोड़ो जब तक एक की दस न सुना लें तो सब्र नहीं आता।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा भाई बद्दू मेरी मजलिस में आकर तू मेरी बेइकरामी करे यह बात तो मुनासिब नहीं है।

वह आगे से कहता है अच्छा आगे से बातें भी बनाते हो।

वह एक गोह शिकार करके लाया हुआ था और उसे ऊँट के पालान सें बाँधा हुआ था, गुस्से में आया, उसको खोला और आपके सामने यूँ फेंका कहने लगा ﴿لا یومن اویومن هذا الضب﴾ मैं तेरी नबुव्वत को नहीं मान सकता जब तक कि यह गोह तेरी नबुव्वत की गवाही न दे। अब वह गोह मरी पड़ी है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿یا ضب﴾ ऐ गोह! ﴿فاجاب بلسان عربی فصیح مبین﴾ गोह फ़सीह अरबी ज़बान में बोली,

﴿لبیك وسعدیك یا زین من وافی یوم القیمة﴾

क्या बोली? लब्बैक मैं हाज़िर हूँ और मेरी सआदत है तू कौन है?

﴿یا زین من وافی یوم القیمة﴾ ऐ वह ज़ात जो क़यामत के दिन लोगों को मुज़य्यन कर देगी, मैं हाज़िर हूँ हुक्म कीजिए।

आप ने फ़रमाया ﴿من تعبد﴾ (उलूहियत का पहला सवाल) ﴿من تعبد﴾ तू किसकी बन्दगी करती है? गोह कहती है,

من فی السماء عرشه وفی الارض سلطانه وفی البحر
سبیله وفی الجنة رحمة وفی النار غضبه.

बद्दू सुन रहा है और सहाबा सुन रहे हैं कि मुर्दा गोह बोल रही है। क्या कहती है?

﴿من فی السماء عرشه﴾ मैं उसकी बन्दगी करती हूँ जिसका अर्श आसमानों पर है,

﴿وفی الارض سلطانه﴾ मैं उसकी ताबेदार हूँ जिसकी सलतनत ज़मीनों पर है,

﴿وفی البحر سبیله﴾ मैं उसकी ग़ुलाम हूँ जिसके मुसख़्ख़र किए हुए रास्ते समुंद्रों में हैं,

﴿وفی الجنة رحمة﴾ मैं उसकी ग़ुलाम हूँ जिसने जन्नत को अपनी रहमत की जगह बनाया है,

﴿وفی النار عقابه﴾ और मैं उसके सामने अपना माथा टेकती हूँ जिसने दोज़ख़ को इन्सानों की बर्बादी के लिए बनाया है।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि ने फ़रमाया ﴿من انا﴾ दूसरा सवाल किया मैं कौन हूँ? (सब सुन रहे हैं, बद्दू भी देख रहा है) आप सवाल फ़रमा रहे हैं ﴿من انا﴾ मैं कौन हूँ? गोह कहती है,

انت رسول رب العالمین وخاتم النبین قد افلح من
صدقت وقد خاب من کذبت یارسول الله.

आप रब्बुल आलमीन के रसूल हैं और ख़ातिमुन्नबियीन हैं जो

आपकी मानेगा कामयाब हो जाएगा जो आपको ठुकराएगा वह हलाक बर्बाद हो जाएगा। इस गोह की गवाही आज भी हम पर सादिक़ आ रही है।

सरकश ऊँटों की फ़रमांबरदारी का वाक़िआ

आक़ा की ख़िदमत में एक अन्सारी सहाबी आए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि मेरे दो ऊँट सरकश हो गए हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे ले चलो। आप गए तो दरवाज़ा बन्द था। एक ऊँट सामने खड़ा था, बिलबिला रहा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्सारी से फ़रमाया दरवाज़ा खोलो। उसने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे डर लगता है कि आपको नुक़सान पहुँचाएंगे। आप ने फ़रमाया ये मुझे कुछ नहीं करेंगे तुम दरवाज़ा खोलो।

जब ऊँट की निगाह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पड़ी, दौड़कर क़दमों में गिर गया ﴿القى بجرانه﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रस्सी से बाँध दिया। दूसरे की तरफ़ देखा वह भी इसी तरह आया और आपके क़दमों पर सिर डाल दिया।

आपने उसको भी रस्सी से बाँध दिया और फ़रमाया लो अब यह भी नाफ़रमानी नहीं करेगा। जानवरों को भी पता था कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब पेड़ों के पास से गुज़रते तो पेड़ कहते ﴿السلام عليك يا رسول الله﴾ यही हाल पत्थरों का था।

झाड़ियों ने दीवार बना दी

आप पेशाब करने निकले। देखा तो झाड़ियों छोटी छोटी थीं। उनके पीछे पर्दा नहीं हो सकता था। जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि इन झाड़ियों को कहो आपस में इकठ्ठी हो जाओ। जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा तो झाड़ियाँ दौड़ती हुई आयीं और आपस में इकठ्ठी हो गयीं। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पेशाब से फ़ारिग़ हो गए तो आपने जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा इनको कहो कि वापस अपनी जगह चली जाएं। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के कहने से फ़ौरन वापस अपनी जगह चली गयीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत की गवाही पेड़ की ज़बान से

एक बद्दू आया। आपने पूछा मुझे नबी मानते हो। कहने लगा नहीं। आपने फ़रमाया कि यह खुजूर का जो पेड़ है, वह टहनी अगर मैं उसे कहूँ कि आकर मेरी गवाही दे तो फिर मुझे नबी मानेगा? कहने लगा हाँ मानूँगा। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेड़ को बुलाया, उसकी टहनी को इशारा किया कि आजा। वह अपनी जगह से टूटी और खुजूर के तने के साथ लगकर ऐसे उतरी जैसे आदमी उतरता है और फिर अपने सिरे पर चलती हुई आई और आकर आपके सामने ऐसे टेढ़ी हो गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ टहनी! ﴿من انا﴾ कहा ﴿اشهد انك رسول الله﴾ मैं गवाही देती हूँ कि तू अल्लाह का रसूल

है। आप ने तीन बार पूछा उसने तीन बार कहा तू अल्लाह का रसूल है, तू अल्लाह का रसूल है, तू अल्लाह का रसूल है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्न व जमाल शायर की नज़र में

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का जो शे'र है, सारी दुनिया की इज़्ज़तें जमा हो जाएं, सारी दुनिया के अश'आर जमा हो जाएं, हस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु के दो बोल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ में हावी हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े होकर कहे थेः

واحسن منك لم ترقط عيني واجمل منك لم تلدا النساء
خلقت مبرأ من كل عيب كانك قد خلقت كما تشاء

और मेरी आँख ने आप जैसा हसीन नहीं देखा और आप जैसा जमाल वाला किसी माँ ने नहीं जना, हर ऐब से पाक पैदा किए गए, गोया कि आपको आपके रब ने आपकी मर्ज़ी के मुताबिक़ पैदा किया। कमाल कर दिया।

لم يخلق الرحمن مثل محمد ابدا وعلم انه لا يخلق

अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसा कोई पैदा नहीं किया और मेरा इल्म है यक़ीन है कि आइन्दा ऐसा कोई पैदा नहीं करेगा।

फिर जिसको अल्लाह ने इज़्ज़त दी हो, हबीब का ख़िताब दिया हो, अपने नाम के साथ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम को जोड़ दिया हो सुब्हानअल्लाह जहाँ मेरा नाम होगा वहाँ तेरा नाम भी होगा।

पहले नबी भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और आख़िरी नबी भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अब आप बताओ जो आपका सफ़ीर बनेगा क़यामत के दिन उसका क्या मक़ाम होगा? मैराज की रात में आपने दरख़्वास्त की या अल्लाह ﴿ابراهيم خليلا ما فعل لى﴾ तो अल्लाह तआला ने आपके नाम को अपने नाम के साथ ज़िक्र किया।

सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने का वाक़िआ

सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का एक लम्बा क़िस्सा है लेकिन मैं इसका आख़िरी टुकड़ा सुनाता हूँ। वह इसाई राहिब के पास रहते थे। कहा आप तो मर रहे हैं तो मैं अब किसके पास जाऊँ? उन्होंने कहा बेटा अब दुनिया में सच मिट गया है। अब तू आख़िरी नबी का इन्तिज़ार कर, वह आने वाला है। जब वह आ जाएगा तो उसका साथ देना। कहा उसकी निशानियाँ क्या होंगी?

राहिब ने कहा वह ज़कात नहीं खाएगा, सदक़ा नहीं खाएगा, हदिये का माल क़ुबूल करेगा और उसकी कमर के बीच सीधे कंधे के क़रीब मुहर होगी नबुव्वत की। यह तीन निशानियाँ याद रखो। बस वह नबी है।

फिर एक लम्बी कहानी चली। बहरहाल वह मदीने पहुँचे इधर रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मदीने पहुँच गए। अब सलमान फ़ारसी को पता चला कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए हैं। अब पहले दिन सलमान फ़ारसी आए और कहा मैं सदक़ा लाया हूँ। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने वह उठाकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को दे दिया। कहा भाई खाओ तुम तो इन्होंने दिल में कहा ﴿هذا اولى﴾ यह पहली निशानी है। फिर खुजूर लेकर आए और कहा मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हदिया लाया हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भी खाई और सहाबा को भी कहा तुम भी खाओ तो उन्होंने कहा ﴿هذا ثانيه﴾ यह दूसरी निशानी हुई। अब सोच में पड़ गए कि तीसरी निशानी कैसे देखूँ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीसरी दिखा दूँ? तीसरी भी दिखा दूँ? आओ देख लो कुर्ता उठाया कहा यह देख लो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

﴿انا نبى الانبياء﴾ मैं नबियों का नबी हूँ,

﴿قائدهم اذا وفدوا﴾ सारे जहाँ की क़यादत करने वाला हूँ,

﴿خطيبهم اذا انصتوا﴾ सारा जहान महशर में ख़ामोश होगा, मैं बोलने वाला हूँ,

﴿شافعهم اذا انحصروا﴾ सारा मैदान हशर जब रुक जाएगा तो मैं सिफ़ारिश करने वाला हूँ,

﴿مبشرهم اذا ايئسوا﴾ जब सारे नाउम्मीद हो जाएंगे मैं खुशख़बरी सुनाने वाला हूँ,

﴿لواء الحمد بيد يوم القيمة﴾ अल्लाह का झंडा मेरे हाथ में है

﴿ان آدم وجميع الانبياء تحت لوائى﴾ आदम अलैहिस्सलाम और उनकी सारी औलाद मेरे झंडे के नीचे है,

﴿ان الجنة حرمت على الانبياء حتى ادخلها﴾ सारे नबियों पर जन्नत हराम है जब तक मैं न चला जाऊँ,

﴿والنهار لمحرمة على الامم حتى تدخلها امتى﴾ और सारी उम्मतों पर

जन्नत हराम है। जब तक मेरी उम्मत जन्नत में न चली जाए।

मेरे भाईयो ज़िन्दगी गुज़ारनी तो है ही और आदमी की तबियत है कि असर लेता है, हम भी असर लेंगे, किसी न किसी से असर लेंगे और वैसा वजूद बनाएंगे, वैसा लिबास पहनेंगे, वैसा कारोबार करेंगे, वैसा ही घर बनाएंगे। अल्लाह तआला कहता है कि किसी से असर न लो, ﴿صبغة الله﴾ अल्लाह के रंग में रंगो। अल्लाह का रंग क्या है? मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। यह मेरा हबीब है इसके तरीके पर आओ।

मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेमिसाल दिलनशीन जिस्म मुबारक का तज़्किरा

आप देखते कैसे थे? ﴿جل نظره الملاحظه﴾ आप आँखों के गोशों से देखते थे। आँखे फाड़कर नहीं देखते थे। हया की वजह से नज़र नहीं उठाते थे। सबक़ दिया कि मैं तुम्हारा नबी हूँ। मैं तो मर्दों के सामने नज़र नहीं उठाता औरों की बेटियों को अपनी नज़र से बचाना, बेहया न हो जाना, बेहयाओं को कभी इज़्ज़त नहीं मिलती।

क़द मुबारक

आपका क़द कैसा था? ﴿اطول من المربوع واقصر من المشذب﴾ न ज़्यादा लम्बा न ज़्यादा छोटा लेकिन आपका मौजिज़ा था कि आप लम्बे से लम्बे आदमी के साथ चलते तो आपका क़द ऊँचा होता था उसका नीचा होता था। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का

क़द तक़रीबन दस फ़िट था जब वह घोड़े पर बैठते तो उनके पाँव ज़मीन पर लगते थे मगर जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ चलते थे तो हज़रत अब्बास का क़द नीचे होता और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऊँचा।

जबीन (माथा) मुबारक

आपका माथा कैसा था? ﴿واسع الجبين﴾ कुशादा पेशानी थी।

नाक मुबारक

आपकी नाक कैसी थी? ﴿اقنى العرنين﴾ ऊँचा उठा हुआ था और बारीक ﴿له نور يعلوه﴾ साथ नूर का हाला था जिसने दायरा बनाया हुआ था।

अबरू मुबारक

आपके अबरू कैसे थे? ﴿ازج الحواجب سوابغ من غير قرن﴾ कमान की तरह थे। क़ौस की शक्ल में थे दर्मियान में बाल नहीं थे, बीच में एक रग थी तो जब गुस्से में आते ﴿بينهما عرق يدره الغضب﴾ तो यह रग उभर आती थी।

आँख मुबारक

आपकी आँखें कैसी थीं? ﴿ادعج اشكل احور اكحل﴾ सरमदी आँख, स्याह आँख मोटी आँख, लम्बी आँख, अन्दर की सफ़ेदी पूरी तरह सफ़ेद, स्याही पूरी तरह स्याह थी और आप जब नज़र उठाते तो कोई आपकी आँखों में नज़रें नहीं डाल सकता था।

होंट मुबारक

आपके होंट कैसे थे? ﴿ضليع الفم﴾ ख़ूबसूरत तराशे हुए होंट थे, दहन मुबारक कुशादा था।

गाल मुबारक

आपके गाल कैसे थे? ﴿سهل الخدين﴾ आपके गाल इस तरह चमकते थे ﴿مشرب اللون﴾ कि उसमें से नूर की शुआएं निकलती थीं।

दाँत मुबारक

आपके दाँत कैसे थे? ﴿مفلج الاسنان﴾ चमकते हुए दाँत। सामने के दाँत कुछ कुशादा मोतियों की तरह चमकते हुए और जब हँसते थे तो कभी कभी दाँतों की चमक सामने दीवार पर भी पड़ती थी।

दाढ़ी मुबारक

आपकी दाढ़ी कैसी थी? ﴿كثرة اللحية﴾ घनी दाढ़ी क़ुदरती एक मुश्त थी न मुंडवाई न कटवाई।

गर्दन मुबारक

आपकी गर्दन कैसी थी? ﴿كان عنقه جيد دمية﴾ गोया हसीन व जमील तराशी हुई मूर्ति की गर्दन हो ﴿في صفاء الفضة﴾ चाँदी की तरह साफ़ और चमकती हुई थी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में कुफ़्फ़ार ने मशहूर किया हुआ था कि इसकी बात न सुनना जो सुनता है वह फँस जाता है। अब भी तो लोग कहते हैं इनके क़रीब न जाना जो जाता है वह फँस जाता है। वह बिस्तर उठा ही लेता है, इनके क़रीब न जाना।

आपकी दिलनशीन आवाज़ का जादू

एक थे तुफ़ैल इब्ने उमर दौसी उनको इतना डराया दिया गया कि उन्होंने कानों में रूई दे ली। उन्होंने कहा मैं उसकी सुनूँगा ही नहीं। कहीं मेरे ऊपर असर न हो जाए तो कहने लगे, "मैं बैतुअल्लाह मैं गया तो देखा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में क़ुरआन पढ़ रहे थे तो मेरे जी में आया कि मैं आक़िल बालिग़ आदमी हूँ, मैं समझदार आदमी हूँ क्या मुझे पता नहीं चलता कि ग़लत क्या है, सही क्या है। मैं सुनूँ तो सही यह कहता क्या है। यह दिल में आया तो मैंने कान से रुई निकाल दी और आपके पास आकर बैठ गया।"

यह आमिल भी थे जादू बड़ा जानते थे। कहने लगे भतीजे मैंने बड़ों बड़ों का जादू निकाला है और जिन्न भगाएं हैं अगर तेरे ऊपर भी कोई जिन्न आ गया है, अगर जादू हो गया है तो मैं तेरा इलाज कर सकता हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया,

ان الحمد و استعينه و اومن به من يهده الله فلا
مضل له و من يضلله فلا هادى له

इन अल्फ़ाज़ में जो असर है जो अरब हैं वही समझ सकते हैं

रसूल के हाथों में हाथ देना पड़ेगा नहीं तो हम भटक जाएंगे, हलाक हो जाएंगे, रास्ता नहीं मिलेगा, मंज़िल नहीं मिलेगी। मंज़िल तक पहुँचने के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम से क़दम मिलाकर चलना पड़ेगा।

यह गाड़ियाँ खड़ी हुई हैं, पचास लाख से लेकर पाँच लाख तक की गाड़ियाँ खड़ी हुई हैं। पचास लाख की गाड़ी के एक टायर में से हवा निकाल दो। क्या निकला? एक रुपए की हवा निकल गई। यह गाड़ी अब नहीं चल सकती, कौन दीवाना है जो इसको चलाएगा? कहेंगे उलट जाएगी। कोई कहे मेरी पचास लाख की गाड़ी है अगर हवा निकल गई तो क्या हो गया? एक रुपए की हवा ही तो निकली है, इससे क्या होता है? गाड़ी चलाओ तो चलाएगा तो ज़रूर मगर उलटकर गिरेगी उसी के ऊपर।

मेरे भाईयो! गाड़ी के पहिए में से हवा निकली गाड़ी उलट गई, महबूबे ख़ुदा की सुन्नत निकली तो क्या ईमान की गाड़ी सलामत चलेगी?

क्या अल्लाह के नबी की सुन्नत टायर की हवा से भी सस्ती है?

क्या अल्लाह के रसूल का तरीक़ा टायर की हवा से भी ज़्यादा सस्ता है?

क्या इसकी अहमियत इतनी भी नहीं जितनी टायर में हवा की?

क्या इसकी क़ीमत इतनी भी नहीं जितनी इस हवा की?

मेरे भाईयो! एक तार कट जाए तो सारा सिस्टम फ़ेल हो जाता है। एक सुन्नत जब टूटती है तो बन्दे और रब का सिस्टम

ज़रूर टूटता है क्योंकि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत नहीं जानते। इसलिए मस्अला यहाँ अटका हुआ है। अल्लाह को वैसा नहीं जानते जैसे वह हैं, उसके रसूल को वैसा नहीं जानते जैसे वह हैं, उसकी मुहब्बतों को हमने नहीं पहचाना, जैसे वह कर के गए, उनके दर्द और दुख हमने नहीं पढ़े जैसे वह कर के गए।

मेरे भाईयो! अल्लाह के रसूल की एक-एक अदा अल्लाह को महबूब है। इस पर आना पड़ेगा। जब तेरी आँखों से दुनिया का पर्दा हटेगा और मौत आएगी और पर्दा खुलेगा ﴿فكشفنا عنك غطاءك﴾ जब तेरी आँख से पर्दा हटाऊँगा फिर तुझे पता चलेगा कि मेरे नबी की एक एक सुन्नत की क्या क़ीमत है?

सुन्नत पर अमल करने से फ़तह

सहाबा के दौर में क़िला फ़तह नहीं हो रहा था। सारे हैरान थे कि क्या वजह है कि क़िला फ़तह नहीं हो रहा है तो अब तवज्जोह की कि किस वजह से फ़तह नहीं हो रहा है?

मेरे भाईयो! मुसलमान की सोच देखो, उन्होंने किस बुनियाद पर क़ैसर व किसरा को तोड़ा? आज इसकी सोचो। सोच में पड़ गए कि क़िला क्यों फ़तह नहीं हो रहा है। कहने लगे हम से मिसवाक की सुन्नत छूटी हुई है। नतीजा यह निकला, क़िला इस लिए फ़तह नहीं हो रहा है कि मिसवाक की सुन्नत छूटी हुई है। सारे लश्कर को हुक्म दिया सब मिसवाक करो।

और हम मज़ाक़ उड़ा रहे हैं कि यह लकड़ियाँ मुँह में लेकर फिरते हैं, अब तो नया ज़माना है, अब तो ब्रश करना चाहिए, यह

तुम क्या मुँह में लकड़ियाँ लेते रहते हो तो ऐसों के साथ अल्लाह की मदद कैसे आएगी? मिसवाक की सुन्नत छूटने पर अल्लाह की मदद हट गई है कि तुम ने मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक सुन्नत को हल्का समझा लिहाज़ा मेरी मदद तुम से दूर हो गई।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत दिल की गहराईयों में उतर जाए कि बस यह मेरे नबी का तरीक़ा है, मैं इसके ख़िलाफ़ नहीं करूंगा। इस सतह पर आना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। और इतना एहसान वह कर गए हैं या तो उन जैसा कोई मोहसिन लाओ फिर उनका तरीक़ा छोड़ दो या उन जैसा कोई क़ुर्बानी करने वाला लाओ फिर उनके तरीक़े छोड़ दो जाकर पूछो तो सही ओहद की वादी में कि यहाँ आपके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कैसे पत्थर पड़े थे। किस तरह काफ़िरों ने घेरे में ले लिया था और चारों तरफ़ से तलवारों की बारिश बरस रही थी और बड़े-बड़े जाँनिसारों के क़दम उखड़ चुक थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब्र की चट्टान बनकर खड़े हुए थे। एक पत्थर पड़ा मुँह पर और दाँत मुबारक टूट गए, कड़ियाँ गालों के अन्दर घुस गयीं। अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़े तो अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे अबूबक्र! तुझे अल्लाह का वास्ता पीछे हट जा, यह इज़्ज़त मुझे लेने दे।

अब हाथ से निकालना मुश्किल हो रहा था तो अपने दाँतों से एक कड़ी को निकाला तो कड़ाक एक दाँत टूट गया, साथ ही कड़ी भी निकल गई। फिर दोबारा अपने मुँह में लिया और दूसरी को खींचा, दूसरा दाँत टूट गया, कड़ी बाहर निकल गई।

फिर तीसरी कड़ी को डाले। तीसरा दाँत भी टूट गया। कड़ी बाहर निकल आई। फिर चौथा दाँत टूट गया। अगले दोनों ऊपर नीचे के दाँत टूट गए। इसके बावजूद सहाबा फ़रमाते हैं कि इन दोनों दाँतों के टूटने से तो हुस्न अधूरा रह जाता है लेकिन हम देखते थे कि अबू उबैदा का हुस्न दोबाला हो गया था। ﴿مـــــــا ينـــا احتـم احســن ابی عبیده احتم﴾ जिसके अगले दो दाँत ऊपर नीचे के टूटे हों उसको अहतम कहते हैं तो आदमी यूँ हो जाता है। अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु का हुस्न दोबाला हो गया। यह फिर इधर आ गए । अब्दुल्लाह बिन कमिया ने सिर पर तलवार मारी एक तलवार यहाँ पड़ी, एक महीने तक ज़ख़्म रहा। एक तलवार सिर पर पड़ी। उससे चकराकर गिर गए, गढ़े में बेहोश हो गए, यहाँ यह ख़बर मशहूर हो गई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। होश में आते ही पहला जुमला या अल्लाह इन्हें कुछ न कहना, उन्हें मेरा पता कोई नहीं।

या अल्लाह! इन्हें अज़ाब न देना,

या अल्लाह! इन्हें अज़ाब न देना, तलवारों की बारिश हो रही है (लेकिन दुआ कर कर रहे हैं कि) या अल्लाह! इन्हें अज़ाब न देना।

मौलाना इलयास रह० और फ़िक्रे उम्मत

मौलाना इलयास रह० ने जब मेवातियों में गश्त शुरू किया और वह मारते थे, गालियाँ देते थे। उलमा ने कहा मौलवी इलयास ने इल्म को ज़लील कर दिया क्योंकि काम वजूद में नहीं था किसी को पता नहीं था। उलमा कहते यह इल्म की ज़िल्लत है। मौलाना इलयास रह० ने कहा—

"हाय मेरा हबीब तो अबूजहल से मार खाता था मैं मुसलमान की मिन्नत करके ज़लील कैसे हो सकता हूँ। मैं तो इस अल्लाह के कलिमे के लिए ज़लील होकर इज़्ज़त हासिल करना चाहता हूँ कि अल्लाह के कलिमे के लिए ज़िल्लत भी इज़्ज़त है।"

यह ज़लील होना नहीं है यह इज़्ज़त वाला होना है।

उम्मत की मुहब्बत में काएनात के सरदार को पत्थर मारे जा रहे हैं

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ख़ेमे में गए और उनसे बात की। उन्होंने कहा हमारा सरदार आ जाए फिर तेरे से बात करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठ गए इन्तिज़ार में बजला बिन क़ैस क़रशी क़ुरैशी नहीं बल्कि क़बीला क़शीर से था। बजला बिन क़ैस आया। उसने कहा यह कौन है? उन्होंने कहा यह वही क़ुरैशी नौजवान है जो कहता है मैं अल्लाह का नबी हूँ और कहता है कि मुझे पनाह दो, मैं अल्लाह का कलिमा पहुँचाना चाहता हूँ। उस ख़बीस ने पीछे से जो नेज़ा मारा और ऊँटनी

भरते हो? तेरी आहें तो अर्श को हिला देती हैं, क्यों इतनी हाय हाय करते हो?

कोई ऐसी हाय-हाय करने वाला तो दिखाए अगर दिखा सको तो उसी की मान लेना, मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़ देना।

जब ऐसे दर्द वाला कोई नहीं, जब ऐसी मुहब्बतें देने वाला कोई नहीं, जब रातों को उठकर ऐसा रोने वाला कोई नहीं, कि जिसकी घनी दाढ़ी हो और आँखों से आँसू टपककर दाढ़ी मुबारक को भर दें और ज़मीन पर आँसुओं का पानी टपक रहा हो और जो आँसू क़मीज़ मुबारक को तर कर दें। क़मीज़ मुबारक भी लठ्ठे की नहीं बल्कि सौफ़ की ऊनी जो किलो पानी तो वैसे ही पी जाए, फिर जो वह सज्दे में सिर रखता है तो यसरिब की पत्थरीली ज़मीन को भी आबाद कर देता है और ज़मीन पर आँसुओं के ढेर लगा देता है और कहता है कि या अल्लाह! यह तो तेरी नहीं मानेंगे मेरे आँसुओं की लाज रख ले।

कोई ऐसा दर्द वाला दिखाओ, कोई ऐसा रोने वाला, तड़पने वाला दिखा दे अगर कोई नहीं है तो फिर उसी की शरिअत रह गई आपको मज़ाक करने के लिए?

उम्मत के लिए पाँच घंटे फ़िक्र करने वाला कौन?

इस महबूब के तरीक़े को छोड़कर कहाँ भागना है? कोई माँ तो ऐसी लाओ जो इतना रोई हो जितना उम्मत के लिए आप रोए। कोई तो ऐसा दिखाएं जो अपनी औलाद के लिए इतना पिसा हो, जितना आप पिसे। कोई बाप तो दिखाओ जिसने पाँच

दिया। अब इन्हें रोज़ी कहाँ से खिलाऊँ? तो अल्लाह के सामने आकर रो रहा हूँ कि या अल्लाह तेरा हुक्म तो मैंने ज़िन्दा कर दिया। देखो फिर अल्लाह ने बिठाकर खिलाना शुरू कर दिया। सात समुंद्र पार से मख़्लूक़ आई और उनकी ज़मीन से तेल के चश्मे निकाल दिए। यह हराम छोड़ने और हलाल पर आने की बरकत है। आज उनको समझ में नहीं आ रहा है कि हम पैसे को कैसे संभालें। अब कोई कहेगा कहाँ से खाएंगे?

हराम कमाई से कलिमा नसीब नहीं हुआ

अल्लामा क़ुरतबी रह० ने एक वाक़िआ लिखा है। एक दुकानदार सुबह सुबह आया। अपनी दुकान की तराज़ू को तोड़ दिया। पड़ोसी दुकानदार ने पूछा क्यों तोड़ा है? कहने लगा हमारा आज पड़ोसी मर रहा था हम ने कहा "ला इलाह इल्लल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाह" यानी कलिमा पढ़ ले। वह कहने लगा मुझसे नहीं पढ़ा जाता। हमने कहा क्यों नहीं पढ़ा जाता? वह कहने लगा मेरी दुकान का तराज़ू, उसका जो काँटा होता है वह मेरे हलक़ में चुभ गया, मुझसे कलिमा नहीं पढ़ा जा रहा है। एक दुकानदार जब ग़लत तोलता है तो वह कहता है सौ रुपया कमा लिया। दस रुपए बचा लिए, पचास रुपए बचा लिए। मरते वक़्त यह हाल हो गया कि कलिमा नसीब नहीं हुआ तो क्या मिला?

तो भाईयो! लोगों का मामला बड़ा सख़्त है। इसलिए अपने आपको बचाओ कि अपने दामन पर किसी मुसलमान का हक़ न पड़ा हुआ हो। अल्लाह अपने हक़ के मामले में बहुत सख़ी है, बहुत सख़ी है। इसकी कोई इन्तिहा नहीं।

गुज़रना पड़ता है। एक अल्लाह है जो उतरने से पाक है, हर इब्तिदा और इन्तिहा से पाक है। बाक़ी हर इंसान कहीं से शुरू होता है कहीं पर मिट जाता है। कभी चढ़ना है कभी उतरना है, कभी जवानी है कभी बुढ़ापा है। कभी सेहत है कभी मर्ज़ है। कभी मौत है कभी मौत के बाद उठना है, कभी क़ब्र का कीड़ा है।

अल्लाह से बग़ावत करते हुए शर्म नहीं आती

मेरे भाईयो! हम सौ फ़ीसद अल्लाह के मुहताज हैं। फिर अल्लाह से बग़ावत कोई अच्छी बात तो नहीं। अल्लाह ही से बाग़ी हो गए। झूठ न बोलें तो कहते हैं तिजारत नहीं चलती। नाप-तोल में कमी न करें तो नफ़ा नहीं होता। ब्याज पर काम न करें तो गुज़ारा नहीं होता। गाना न सुनें तो गुज़ारा नहीं होता। गाली न दें तो कोई नौकर हमारी बात नहीं मानता।

कितने उज़्र हमने घढ़े हुए हैं। ये सिर्फ़ गालियों से सीधे होते हैं। मैं कहता हूँ सात ज़मीन व आसमान को आग लगा दो यह थोड़ा नुक़सान है। किसी मुसलमान को माँ-बहन की गाली देना इससे बड़ा नुक़सान है। ज़मीन व आसमान तो चलो छोटी चीज़ें हैं बैतुल्लाह को तोड़ दो, बैतुल्लाह को चूरा चूरा बना दो, उसके पत्थरों को कूट कूटकर बजरी बना दो, यह छोटा गुनाह है मगर किसी मुसलमान को माँ-बहन की गाली देना इससे बड़ा गुनाह है।

सोचो तो सही किसको नाराज़ कर रहे हो?

कितनी आसानी से अल्लाह का हुक्म तोड़ देते हो। कोई